thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १४, अंक ५, १०मई २०१४

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

म.दयानन्द के परम शिष्य, मेधावी विद्वान, प्रचारक

पण्डित गुरूदत्तजी

thearyasamaj.org

।। प्रान्तीय सभाद्वारा 'आर्य पुरोहित सम्मान समारोह' ।।

यशस्वी पुरोहित पं.विश्वनाथजी शास्त्री (पिंपरी-पुणे) का सपत्नीक सम्मान करते हुए सभा के प्रधान स्वामी श्रद्धानन्दजी एवं कोषाध्यक्ष श्री राठौर।

सोलापुर के समर्पित विद्वान पुरोहित पं. राजवीरजी शास्त्री का सम्मान करते हुए स्वा.सै. कपिलमुनिजी (तुकारामजी गंजेवार)।

सभा के उपदेशक पं. सुधाकरजी शास्त्री का सपत्नीक सम्मान करते हुए सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एड्.प्रकाशजी आर्य व प्रो.होलीकर।

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ | कलि संवत् ५११६ | विक्रम संवत् २०७१
दयानन्दाब्द १९१ | वैशाख | १० मई २०१४

प्रधान सम्पादक
राजेंन्द्र दिवे
(मो.०९८२२३६५२७२)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.०९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक- डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो. ०९४२१९५११९०४), प्रो. देवदत्त तुंगार (मो.०९३७२५४१७७७)
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीय..४
२) स्मरण पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का...................................५
३) पवित्र वेदों से ही विज्ञान की उत्पत्ति..............................६
४) धर्मप्रचार में समर्पित हैं जो विद्वान पुरोहित...........................१०
५) समाचार दर्पण..१८
६) शोकसमाचार..२१

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी..............................२३
२) सुभाषित रसास्वादः..२४
३) म. दयानंदांचे सामाजिक विचार....................................२५
४) गाथा वाचू दयानंदाची..२९
५) ज्येष्ठ विचारवंत डॉ.वाघमारे यांची गुरुकुल भेट.......................३१
६) शोकवार्ता..३२

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. ५०/-
आजीवन रु. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.वीड ही होगा।

thearyasamaj.org

सम्पादकीयम् संस्कारों व विधियों का संवर्धन कैसे ?

वैदिक सोलह संस्कारों व विभिन्न यज्ञविधियों की विशुद्ध परंपरा को निरंतर अक्षुण्ण बनाये रखना, हम सब आर्यजनों का परमकर्तव्य है। ऋषिवर दयानन्द ने अपनी अपूर्व साधनाद्वारा वेदज्ञानप्रकाश के साथ ही संस्कारों व याज्ञिक कर्मकांड के शुद्ध स्वरूप को हमारे सम्मुख रखा, जिसे पाकर हमारी आध्यात्मिक उन्नति का सोपान सिद्ध हो सकता है। आर्य समाज के प्रचारकार्य में इन विधियों का महत्वपूर्ण स्थान है, किन्तु विचारों के परिवर्तन के साथ ही हम इन्हें अपनायेंगें, तो वे सार्थक सिद्ध हो सकते हैं।

आजकल के बदलते परिवेश में लोग आर्यसमाज की धार्मिक विधियों व संस्कारों को अपना रहे हैं, ये अच्छे संकेत हैं। परम्परागत कर्मकांड से ऊब चुके लोग अब आर्य समाज की संस्कार पद्धतियों को स्वीकार कर रहे हैं। इससे वैदिक धर्म का प्रचार होने में मदद भी मिलती हैं। प्रश्न यह उठता है कि क्या इस प्रकार के प्रयासों से सही अर्थों में वैदिक धर्म की विचारधारा पूर्णतया प्रचारित होंगी ? उदाहरण के तौर पर हम विवाह संस्कार को ही लेते हैं। आज बडे पैमाने पर लोग अपने पुत्रों व कन्याओं तथा अन्य रिश्तेदारों के विवाह में वैदिक विधि को अपना रहे हैं। इनमें अधिकांश यजमान इस वैदिक विधि के साथ ही पौराणिक विधि को जोडना चाहते हैं। कईं स्थानों पर तो यह भी देखा गया है कि यजमान लोग वधु-वर को समय पर विवाहवेदी पर पहुंचाते ही नहीं। मंदिर जाने व नाच-गाना करने आदि में समय की बरबादी पर विलंब से आते हैं और पुरोहितों से शीघ्रतापूर्वक विवाहविधि सम्पन्न कराने का आग्रह करते हैं। ऐसे में विवश होकर पंडितों को भी जैसे-तैसे विवाह को निपटाना पडता है। साथ ही अंत में वही पौराणिक विधि (यथा-महाराष्ट्र मंगलअष्टक गायन) का जोडना। इन बातों से वैदिक विवाह पद्धति का स्वरूप विकृत हो जाता हैं तथा नये लोगो के सामने गलत ही संदेश पहुंचता हैं। आगे भविष्य में अन्य लोगों में इसी तरह के विवाहादि संस्कारों को कराने की प्रवृत्ति जाग उठती हैं। एक प्रकार से यह वैदिक संस्कारों की विशुद्ध परंपराओं को खंडित करना है। इससे वैदिक विधियों के संवर्धन के बजाय उनकी महत्ता को कम करने जैसा ही होगा। अतः विचारों के परिवर्तन की ही आवश्यकता है।

thearyasamaj.org

श्रुति संदेश

विद्वानों का सत्संग पाओ !

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवाउँ॰ सः समिन्धते ।
विष्णोर्यत्परमं पदम् ।। (यजु.३३/४४)

पदार्थान्वय :- हे मनुष्यो ! जो (जागृवांसः) अविधारूप निद्रा से उठकर चेतन हुए (विपन्यवः) विशेषकर स्तुति करने योग्य वा ईश्वर की स्तुति करनेहारे (विप्रासः) बुद्धिमान् योगी लोग (विष्णोः) सर्वत्र अभिव्यापक परमात्मा का (यत्) जो (परमम्) उत्तम (पदम्) प्राप्त होने योग्य मोक्षदायी स्वरूप है, (तत्) उसको (सम्, इन्धते) सम्यक् प्रकाशित करते हैं, उनके सत्संग से तुम लोग भी वैसे होओ !

भावार्थः- जो योगाभ्यासादि सत्कर्मों को करके शुद्ध मन और आत्मावाले धार्मिक पुरूषार्थी जन हैं, वे ही व्यापक परमेश्वर के स्वरूप को जानने और उसके प्राप्त होने योग्य होते हैं, अन्य नहीं । (महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेदभाष्य से साभार)

स्मरण पं. गुरूदत्त विद्यार्थी का...

गुरूदत्तजी का जन्म २६ अप्रैल १८६४ को मुलतान में अध्यापक श्री रामकृष्णजी के यहाँ हुआ । बचपन में ही आपकी धार्मिक प्रवृत्ति के कारण सहपाठी उन्हें वैरागी कह कर पुकारते थे । संस्कृत सीखने के आकर्षण के कारण वे आर्य समाज की ओर आकृष्ट हुए और महर्षि दयानन्द की विचारधारा के संपर्क में आये । अपनी प्रखर मेधा बुद्धि के बल पर आपने एम.ए. की परीक्षा में पंजाब विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त किया तथा गवर्मेण्ट कॉलेज लाहौर में विज्ञान के प्रोफेसर के गौरवशाली पद को प्राप्त किया । गुरूदत्तजी विद्यार्थी काल में ही वैदिक शिक्षाओं के प्रचार में तथा आर्य समाज के कार्य में काफी सक्रिय रहते थे । पाश्चात्य दर्शन के सम्पर्क में आकर ईश्वर के अस्तित्व को लेकर आपके कुछ संशय रहे, पर वैदिक वाङमय के तलस्पर्शी अध्ययन से इनका निवारण भी हो गया । आपके द्वारा तर्क के धरातल पर प्रस्तुत किये जाने वाले उद्बोधन के फलस्वरूप बहुत से नवयुवक वैदिक धर्म में दीक्षित हुए, जिनमें लाला लाजपत राय भी एक थे ।

३० अक्टूबर १८८३ को अजमेर में महर्षि दयानन्द द्वारा-'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो' कह कर जिस शान्त मनः स्थिति में प्राण-त्याग किया गया, इस दृश्य को देखकर आप पूर्णतः आस्तिक बन गये । वेदों के अध्ययन तथा योग सीखने की लगन इस हद तक बढी कि आपने प्रोफेसर के पद से भी त्यागपत्र दे दिया । आर्ष ग्रन्थों के अध्यापन हेतु आपने वैदिक क्लास खोली तथा वैदिक मैग्जीन नामक पत्रिका का संपादन व प्रकाशन भी किया । आर्य समाज तथा वैदिक शिक्षाओं के प्रचार प्रसार हेतु दीवानगी की हद तक कार्य करते रहने से आप स्वास्थ्य की तरफ ध्यान देने से विरत् हो गये, फलतः १९ मार्च १८९० में मात्र २६ वर्ष की अवस्था में, माँ आर्य समाज के इस लाडले सपूत का देहावसान हो गया ।

(श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास उदयपुर द्वारा प्रकाशित 'दयानन्द दर्शन' से साभार)

thearyasamaj.org

पवित्र वेदों से ही विज्ञान की उत्पत्ति

– धर्मभिक्षु (चतुर्भुजप्रसाद आर्य)

पवित्र वेद परमात्मा की वाणी है। परमपिता परमेश्वर जब-जब सृष्टि की रचना करते हैं, तब-तब ऋषियों के मानस में पवित्र वेदों की उत्पत्ति करते हैं। पवित्र चारों वेदों की उत्पत्ति के बाद ही संस्कृत भाषा की उत्पत्ति हुयी और संस्कृत भाषा से ही दुनिया की क्रमश: सभी भाषाओं की उत्पत्ति हुयी।

परमात्मा की सृष्टि दो प्रकार की है। अभी सृष्टि काल है, जिसमें हम आकाश, अग्नि, जल, पृथ्वी, पहाड, नदी, समुद्र, मनुष्य, पेड-पौधा, वृक्ष, पशु, जानवर, कीडा-मकोडा आदि को देखते हैं। दूसरा परमात्मा की सृष्टि जब निहित समय के अंतर्गत समाप्त हो जाती है, तब प्रलय काल की दूसरी सृष्टि रहती है। इस प्रकार दो सृष्टि में केवल तीन ही चीजें बराबर अक्षुण्ण बनी रहती हैं। जिसका नाम ईश्वर, जीव और प्रकृती है। ईश्वर सृष्टि कर्त्ता हैं। प्रकृति के तत्वों से सृष्टि जीवों के लिए बनाते हैं।

जब पवित्र चारों वेदों की उत्पत्ति परमात्मा करते हैं, तभी इन्हीं पवित्र वेदों से ही नाना प्रकार की विद्याओं को ऋषि, महर्षि, विद्वान आदि अपनी-अपनी पुस्तकों में प्रकाशित करते हैं।

आज दुनिया के सभी वैज्ञानिक दावा करते हैं कि हमने दुनिया के अन्दर नयी-नयी चीजों की रचना की हैं। वैज्ञानिकों के इस दावे का मैं पुरजोर खंडन करता हूँ। दुनिया के सभी वैज्ञानिकों से मैं विनम्रतापूर्वक पूछता हूँ कि आप लोगों ने जब नयी-नयी चीजों का रचना कीए हैं, तो विज्ञान में सर्च, रिसर्च, ईन्मेनशन और डीसनरी शब्द ही क्यों हैं ? विज्ञान में नयी-नयी चीजों को बनाने जैसा शब्द क्यों नहीं है ? सर्च, रिसर्च, ईन्मेशन और डीसनरी शब्द का तो यही अर्थ है कि जो चीज पहले से बनायी गयी है, उसी को वैज्ञानिक खोजते हैं। पहले से बनाने का अर्थ है कि परमपिता परमेश्वर आज से लगभग एक अरब छियान्बे करोड, आठ लाख, तीरपन हजार से भी पहले जब सृष्टि रचना कीए तभी उन सभी चीजों को बनाकर रख दीए, जिसकी खोज वैज्ञानिक अनवरत रुप से करते रहते हैं। फिर भी, परमात्मा की बनाई हुयी चीजों का पूर्ण रुप से आज तक न खोज पाये हैं, और आगे सृष्टि अभी दो अरब तैंतीस करोड वर्ष से भी अधिक दिनों तक रहेगी, उन अगले दिनों में भी नहीं खोज पायेंगे। परमात्मा द्वारा बनाई हुयी चीजों को वैज्ञानिक कैसे खोजते

thearyasamaj.org

है ? इसमे पवित्र ऋग्वेद के निम्न मंत्र का प्रमाण है :-

'विष्णो: कर्माणि पश्यत यतो व्रताणि पश–पशे इन्द्रस्य युज्य: सखा ।' प्रस्तुत प्रसंग को प्रमाणित करने के लिए इस मन्त्र के पूर्व के केवल तीन शब्दों को ही हम ग्रहण करेंगे । वे तीन शब्द है: – 'विष्णो: कर्माणि पश्यत ।' विष्णु शब्द वृषली व्याप्तौ धातु में जब नु प्रत्यय लगता है, तब विष्णु, शब्द सिद्ध होता है । 'वेवेष्टि व्याप्नोति चराचरं जगत स: विष्णु ।' महर्षि दयानन्द सरस्वती विष्णु शब्द का अर्थ संस्कृत में किए हैं । जिसका अर्थ हिन्दी में ऐसा है 'विष्णु नाम परमात्मा का है । सृष्टि की आदि में परमात्मा जब चर (चलायमान) और अचर (अचलायमान) सृष्टि की रचना कर सबों को धारण कर रहे हैं ।' अब हम लोग अपने प्रसंग पर विचार करेंगे । इतन तीन शब्दों का अर्थ हुआ कि, 'ऐ मनुष्यों ! परमात्मा के कर्मो को देखो ।' परमात्मा ने सृष्टि रचना के तुरन्त बाद चिडिया को आकाश में उडाया तो वैज्ञानिकों ने हवाई जहाज की खोज कीया । दुनिया के सबसे बडे मूर्ख से पूछा जाय कि सबसे पहले आकाश में हवाई जहाज उडा या चिडिया उडी है दुनिया के अन्दर कोई वैज्ञानिक जो साबित कर सके कि आकाश में पहले हवाई जहाज उडा ? इसी प्रकार जब–जब जलचर जीवों को पानी में तैरते देखा तो वैज्ञानिकों ने नौकायान और बडे–बडे युद्धपोतों का निर्माण किया । आकाश में बिजली को कौंधते देखा, तो बिजली की खोज हुई । ज्वालामुखी को फूटते देखा, तो बम और अणुबम आदि का रिसर्च हुआ । इससे साफ तौर पर स्पष्ट होता है कि परमात्मा द्वारा बनाई गयी चीजों की वैज्ञानिक खोज करते हैं ।

आज दुनिया के लोगों से पूछा जाय कि पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त का अविष्कारक कौन है ? तो मैं समझता हूँ कि दुनिया के शत–प्रतिशत लोग न्यूटन को ही बतायेंगे । न्यूटन का समय आज से करीब ३०० वर्ष पूर्व हुआ और श्री कृष्ण का समय आज करीब ५००० (पाँच हजार) वर्ष पूर्व हुआ । योगिराज श्रीकृष्ण की वाणी ही गीता है । गीता प्रेस गोरखपुर की छपी गीता, जो ७०० श्लोकों में तथा जो १८ अध्यायों में विभक्त हैं, वह सम्पूर्ण गीता पवित्र वेद के अनुकूल नहीं है । मथुरा से उत्तर दिशा में एक काशगंज नामक कसबा है, जहाँ आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान श्रीराम आर्य हुए थे । इन्होंने गीता का शोध करके करीब ७०/७२ श्लोकों को ही पवित्र वेद के अनुकूल बताए हैं । गीता भी उपनिषद ही है । सभी उपनिषदों की उत्पत्ति पवित्र यजुर्वेद

thearyasamaj.org

अध्याय ४० के मात्र १७ वेदमन्त्रों से ही हुई है ।

पवित्र योग के आठ अंग है । यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि। गीता अध्याय ६ में श्लोक संख्या १० से लेकर १३ तक आसन शब्द का वर्णन है । अध्याय ११ की दूसरी पंक्ति है :- 'नात्युच्छितं नातिनीचं चैलाजिन कुशोत्तरम् ।' इस श्लोक में श्रीकृष्ण अर्जुन के माध्यम से दुनिया के सभी लोगों को उपदेश दे रहे हैं कि, 'हे अर्जुन ! जमीन उँच-नीच हो । सपाट हो और उस पर कुश की चटाई बीछा कर आसन लगाओ।' क्योंकि अर्जुन का प्रश्न था कि मन बहुत ही चंचल है और उसे किस प्रकार रोककर नियंत्रित किया जाय ? और ईश्वर में ध्यान को कैसे लगायें इसी क्रम में योगिराज श्रीकृष्ण का उपर्युक्त उपदेश हैं । कुश की चटाई, ऊन का कम्बल या चादर, बाघ का छाल, शेर का छाल, हरीण का छाल इन सभी चीजों को भौतिक विज्ञान में बिजली कुचालक कहा गया है । बिजली कुचालक का अर्थ यह हुआ कि बिजली के प्रवाह को ये वस्तुएँ रोकर विपरित दिशा में मोड देती है । कुश की चटाई पर बैठकर ध्यान लगाने का अर्थ यह हुआ कि पृथ्वी में अपने तरफ आकर्षण करने की शक्ति है । जब हम इन बिजली कुचालक वस्तुओं पर बैठकर परमात्मा का ध्यान लगायेंगे तो पृथ्वी हमारे ध्यान को परमात्मा के सिवा किसी दूसरी वस्तु में लगने नहीं देगी । इस प्रकार से पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त का प्रतिपादन आधुनिक वैज्ञानिक न्यूटन नहीं, अपितु योगीराज श्रीकृष्णने किया हैं ।

अंकगणित में केवल १ से लेकर १० तक ही अंक हैं । केवल इन्हीं १० अंकों के सहयोग से ही सौ,हजार, दस हजार, लाख, दस लाख, करोड से लेकर महाशंख तक हम लिख लेते हैं । इन अंको की उत्पत्ति का प्रमाण पवित्र अथर्व वेद में निम्न है :-

न द्वितीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते ।"
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते ।
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते ।
तमिदं निगतं सहः स एष एक वृदेक एव ।
सर्वे अस्मिन् देवा एकवृतो भवन्ति ।।

अर्थ :- परमात्मा दूसरा, तिसरा, चौथा, पाँचवा, छट्ठा, सातवाँ, आठवाँ, नवाँ एवं दसवां नहीं है, अपितु वह एक है और प्रलयकाल में सम्पूर्ण सृष्टि को बनाकर धारण कर रहे है । यह निर्विवाद सत्य है कि उनकी शक्ति का वार-पार की समीक्षा हम मनुष्यों की जानकारी से बहुत परे है । परमपिता परमेश्वर ही सूर्य को बनाकर उसे धारण कर रहे हैं । इस प्रकार से सूर्य परमात्मा की शक्ति से सम्पूर्ण लोक-

thearyasamaj.org

लोकान्तरों को धारण किए हुए है। इसी कारण से सभी ग्रह, नक्षत्र, तारे, चन्द्रमा, पृथ्वी आदि अपनी-अपनी धूरी पर चल रहे हैं। इसमें पवित्र ऋग्वेद का प्रमाण है –

'यदा ते दृर्ष्यता हरीवावृधाते दिवेदिवे। अदित्ते विश्वा भुवनानि येमिरे।'

अर्थ :- 'हे इन्द्र परमेश्वर ! आपके अनंत बल पराक्रम गुणों से सब संसार का धारण आकर्षण और पालन होता है। आपके ही सब गुण सूर्य्यादि लोकों को धारण करते हैं, और सूर्य सभी दूसरे लोगों को धारण करने से ही अपनी-अपनी कक्षा में चलते रहते हैं। इधर-उधर विचलित नहीं होते हैं।' इससे वैज्ञानिक कई प्रकार के खोज करते हैं।

रेखागणित में द्विभुज, त्रिभुज, चतुर्भुज जो सब चीजें आयी हैं, ये सभी चीजें पवित्र यजुर्वेद के कई मन्त्रों में परमपिता परमेश्वर प्रकाशित कर चुके हैं।

इस प्रकार जब हम सूक्ष्म रुप स पवित्र वेद पर दृष्टिपात करेंगे और ध्यानयोग की क्रियाओं के द्वारा चिन्तन मनन करेंगे, तो विविध सृष्टि में जो भी चीजें वैज्ञानिकों द्वारा खोजी गई है, उसके मूल में परमपिता परमेश्वर की ही एकमात्र शक्ति व्याप्त दिखाई पडेगी जो पवित्र वेद में हैं। हम मनुष्यों में कदापि वह शक्ति नहीं, जिसके द्वारा हम किसी नयी वस्तु की रचना कर सकें। इसलिए परमात्मा द्वारा बनाई गई वस्तुओं की ही हम खोज करते हैं, जिसके चलते विज्ञान में सर्च, रिसर्च, ईन्मेशन और डिकसभरी शब्द ही है।

अत: इससे सिद्ध हो गया कि पवित्र वेद से ही विज्ञान की उत्पत्ति हुयी है।

* * * * *

-आर्य सदन, मवेशी अस्पताल रोड, मोतिहारी, जि. पूर्वी चम्पारण (बिहार)
मो. ०८००२०४४८५१

पं. लेखराम उपदेशक महाविद्यालय में नि:शुल्क प्रवेश

आर्य समाज परली द्वारा संचालित गुरूकुल आश्रम नंदागौळ मार्ग, परली में प्रांतीय सभा द्वारा 'पं. लेखराम उपदेशक महाविद्यालय' कार्यरत है। इसमें न्यूनत: ९ वी उत्तीर्ण छात्रों को प्रवेश दिया जाएगा। इस संस्था का तीन वर्षो का पाठ्यक्रम है, जिसमें विद्यार्थियों को वैदिक सिद्धांतों का प्रशिक्षण दिया जाता है। भविष्य में वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु उपदेशक, व्याख्याता, भजनोपदेशक, पुरोहित आदि तैयार करना यह इस महाविद्यालय का उद्देश्य है। प्रत्येक वर्ष पांच छात्रों को इस महाविद्यालय में नि:शुल्क प्रवेश दिया जाता है। भोजन, निवास तथा शिक्षा भी नि:शुल्क होती है।

thearyasamaj.org

धर्मप्रचार में समर्पित हैं, जो विद्धान पुरोहित

– प्रा.अरुण चव्हाण, पं.तानाजी शास्त्री

आर्य समाज की विचारधारा को अपने जीवन में उतारकर वैदिक सिद्धांतों को जन–जन तक पहुंचाने में पुरोहित वर्ग की भूमिका अहम् रही है । महर्षि दयानंद का वैदिक संदेश इन्हीं वेदप्रचारकों के कारण समय–समय पर देश–विदेशो में फैलता रहा है । ऐसे ही आदर्श पुरोहितों में महाराष्ट्र के समर्पित छः पुरोहित सर्वश्री स्व.पं.विश्वमित्रजी शास्त्री(हिसार), पं.दिनकररावजी देशपांडे(गुंजोटी), पं.विश्वनाथजी शास्त्री(पुणे), पं.राजवीर शास्त्री(सोलापूर), पं.प्रियदत्तजी शास्त्री (हैदराबाद) व पं.सुधाकरजी शास्त्री(महोपदेशक, महाराष्ट्र सभा) इन्होंने कर्मठता से बहुत ही प्रेरक कार्य किया है। उनकी समर्पक कार्यनिष्ठा को देखते हुए महराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभाने इन छहों महानुभावों का गत दि.९ मार्च २०१४ को विशेष समारोह में गौरव किया । विशेषत: इन छहों विद्वानों का जन्मस्थान हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम क्रांतिकारी हुतात्मा पं.वेदप्रकाश आर्य की जन्मभूमि गुंजोटी व औराद परिसर ही रही है । आर्य कार्यकर्ताओं तथा आनेवाली पीढी को इनकी जीवनज्योति से नयी चेतना मिलें, इस उद्देश्य से इन पुरोहितों के जीवन व कार्य का परिचय यहाँ पर दिया जा रहा है । देश का भावी पुरोहितवर्ग इन विद्वानों के पदचिन्हों पर चलते हुए आर्य समाज की वैदिक पताका को विश्वभर में फहराते रहेगा,

यही आकांक्षा ! – संपादक

---

१)स्व.पं.आचार्य विश्वमित्रजी शास्त्री(हिसार–हरियाणा) –

मराठवाडा के धाराशिव(उस्मानाबाद) जिले के उमरगा तहसिल अंतर्गत औराद नामक छोटासा गांव है, जहां पर श्रमिक, कृषक परिवारों का वास्तव्य रहा है । परिश्रम कर अपनी उपजीविका चलाने में ही धन्यता मानने वाले इसी गांव के नवयुवकों में होड लगी रहती है । हैदराबाद मुक्तिसंग्राम हो, हिंदी सत्याग्रह हो, देश सेवार्थ फौज में भरती होना हो, गुरुकुलीय शिक्षणप्रणाली हो, यहाँ का नवयुवक अग्रसर रहा है । इसी गांव के श्री महादेव तथा माता रुक्मीणीबाई विभुते

thearyasamaj.org
इस कट्टर लिंगायत कृषक दम्पती परिवार में अप्पाराव उर्फ विश्वमित्र का जन्म हुआ । शैशवकाल से इस बालक की बुद्धिमत्ता को पहचानकर माता-पिता ने स्कूल में भरती कराया । लोकमान्य तिलक विद्यालय, कदेर (तहसील उमरगा) से आपकी दसवी कक्षा तक की पढाई पूर्ण हुई । बालक की प्रगति को देखकर, आगे क्या करें ? इस कठिन समस्या को सुलझाने के लिए वैदिक विचारधारा को अपने अनोखे ढंग से घर-घर पहुँचानेवाले वैद्य विज्ञानमुनि (पूर्वाश्रम के अण्णाराव पाटील) से मिले । इस बालक को लेकर अण्णारावजी पाटील अपने गुरुदेव स्वामी श्रद्धानंदजी (पूर्वाश्रम के हरिश्चंद्र गुरुजी) के समीप पहुँचे। स्वामी श्रद्धानंदजीने इस बालक को दयानंद ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा) भेजकर महाराष्ट्र का **पहला आर्य उपदेशक** बनाया । तभी से इस गांव के नवयुकों में उपदेशक होने तथा संस्कृत अध्ययन करने की इच्छाएं जागृत होने लगी ।

अपनी अद्‌भूत स्मरणशक्ति, बुद्धिमत्ता, नम्रता आदि सद्‌गुणों के कारण श्री विश्वमित्रजी अपने आचार्य सत्यप्रियजी के कृपापात्र बनें । यहीं पर विद्यावाचस्पति, विद्याभास्कर, शास्त्री तथा आचार्य की उपाधियों से वे अलंकृत हुए। आगे चलकर उन्होंने आर्य समाज नागोरी गेट, हिसार (लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित आर्य समाज) में उपदेशक के रुप में रहकर ऋषि दयानंद का वेदोक्त संदेश अपने उपदेशों से घर-घर पहुँचाने का कार्य किया ।

आपका कोमल स्वभाव, प्रभावशाली वक्तृत्त्व, विद्वत्ता, कार्यकुशलता तथा सुयोग्य आचरण से ही हरियाणा, महाराष्ट्र, पंजाब, पश्चिम बंगाल, राजस्थान आदि राज्यों में आप आर्य जगत् के चहेते बन गये । इसी कार्य से प्रेरित होकर आर्य जगत् की अनेकों संस्थाओं ने आपको सम्मानित किया । **'पुरुषार्थियों के लिए कोई कार्य कठिन नहीं होता।'** इस सिद्धांत के अनुसार कठिन परिस्थितियों मे दयानंद ब्राह्म महाविद्यालय के आचार्य पद को आपने सुशोभित किया । कर्मठता एवं कार्यकुशलता से आपने पं. विश्वनाथ शास्त्री, योगाचार्य पं. कर्मवीर, पं. राजवीर शास्त्री, पं.सुधाकर शास्त्री, पं.डॉ.रामचंद्र शास्त्री (लंदन) जैसे अनेकों प्रख्यात विद्वानों का निर्माण कर अपनी आचार्यपद की प्रतिष्ठा को बढाया है ।

लगभग चार दशक तक आपने महर्षि दयानंद का संदेश सर्वदूर पहुँचाकर सशक्त राष्ट्र के निर्माण में चरित्रवान नवयुवकों का निर्माण कराया । अपने पौरोहित्य के साथ साथ गरीब, मेधावी छात्रों की शिक्षा-दीक्षा का जिम्मा भली भाँती उठाकर **'वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता:।'** का परिचय दिया । जाति-पाती के बन्धनों को तोडकर आपने अपनी इकलौती पुत्री पल्लवी का अंतरजातीय विवाह कर ऋषि के ऋण को चुकाने का

thearyasamaj.org

महत्तम कार्य किया है । दुर्भाग्य से ऐसे स्थितप्रज्ञ, मृदु स्वभाव, कुशल संघटक तथा समर्पित पुरोहित पं.विश्वमित्र शास्त्री का सन २०११ में स्वर्गवास हुआ।

इस आदर्श पुरोहित के अकस्मात चले जाने से आर्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई। परमात्मा शास्त्रीजी की दिवंगत आत्मा को शांति व सद्‌गति प्रदान करे । उनके पश्चात् उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शशिकलादेवी अपने पति के पदचिन्हों पर चलते हुए समाज कार्य में योगदान दे रही है

२) श्री पं.दिनकररावजी देशपांडे (गुंजोटी) ता. उमरगा –

हुतात्मा वेदप्रकाश के लहुसे पावन हुआ गुंजोटी यह गांव मराठवाडा के धाराशिव मंडल का प्रतिष्ठित स्थान रहा है । बुद्धिवादी, शांतताप्रिय, सुसंस्कृत, वैदिक विचारधारा एवं आर्य समाज व देव दयानंद से प्रेरित है । इसी ऐतिहासिक गांव के कुलीन ब्राह्मण परिवार में पिता श्री बाबाराव देशपांडे तथा माता श्रीमती रंगुबाई के घर १२ जुलै १९३५ को दिनकररावजी का जन्म हुआ ।

स्वाधीनता आंदोलन का केंद्र बनें क्रांतिकारी शिक्षा संस्थान श्रीकृष्ण विद्यालय गुंजोटी से आपकी शिक्षा पूर्ण हुई। हैदराबाद से एच.एस.सी., टी.सी.की उपाधि प्राप्त कर वेदोक्त समाज एवं राष्ट्र ऋण से उऋण होने के लिए इसी पाठशाला में देशभक्ति, प्रामाणिकता, कर्तव्यनिष्ठा आदि वैदिक संस्कारों का चार वर्ष तक आपने अध्यापक के रुप में कार्य किया। बाद में लोकमान्य तिलक विद्यालय कदेर में प्रधानाध्यापक का पदभार दो सालतक निष्ठा से संभालकर पद की गरिमा बढाई । इसीलिए आप सर्वत्र 'गुरुजी' के रूप में पहचाने जाते हैं। सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक, धार्मिक, राष्ट्रीय तथा वैदिक विचारधाराओं वाली अनेकों संस्थाओं में गांव से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक प्रतिनिधित्व कर आपने अपनी योग्यता का परिचय दिया है । गांव में जाति-पाति, भाई-भाई, पिता-पुत्र, पति-पत्नी दोनों ही पक्ष अपना विवाद लेकर आपके ही समीप आते हैं तथा आपके परामर्शानुसार बर्ताव करने में ही अपनी धन्यता मानते हैं । आपके ही हाथों सबके विवाह 'वैदिक पद्धति' से संपन्न हो, ऐसी आर्य परिवारों की आकांक्षा के कारण आप एक कुशल पुरोहित बनें । आपका पौरोहित्य कार्य संस्कारकुशलता का परिचय देता है ।

कन्या संस्कार शिबिरों में आपने अपनी वाणी तथा कृति से अनेकों वर्षों में

thearyasamaj.org

हजारों कन्याओं को संस्कारित कर महर्षि दयानंद के सपनों को साकार करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। जीवनभर वैदिक विचारों का बिगुल आप बजाते रहें। आपके इस सामाजिक व आर्य समाज प्रचार कार्य में आपकी धर्मपत्नी श्रीमती रसिकाजीने बहुत बडा सहयोग दिया है। धर्मपरायणा सीताजी की भाँति वे जीवन के हर पडाव पर आपका साथ देती है।

३) पं.विश्वनाथजी शास्त्री (पिंपरी-पुणे) -

पुणे जैसे प्रतिष्ठित नगर में अहर्निश वैदिक संस्कारों को सम्पन्न कराने में संलग्न पं.विश्वनाथजी ने शास्त्री को कौन नहीं पहचानता ? इन्होंने दि.१० जनवरी १९५७ को श्री देवराव कृष्णाजी पवार के घर पूज्या माता पार्वतीदेवी की पवित्र कोख से औराद(गुंजोटी) ता.उमरगा में जन्म पाया। तब कौन जानता था कि इतने छोटेसे गाँव में उत्पन्न हुआ यह बालक आगे चलकर विपरित परिस्थितियों में धर्म प्रचार की धुरा अपने मजबूत कंधों पर संभाले रखेगा। माता-पिता के धार्मिक संस्कारों की छत्रछायामें पलते-बढते आपने श्रीकृष्ण विद्यालय गुंजोटी में ग्यारहवी कक्षा तक शिक्षा पायी। कुमार अवस्था में आपकी आत्मा गुरुकुलीय शिक्षा के प्रति आकृष्ट हुई और आपने दयानंद ब्राह्म विद्यालय हिसार (हरियाणा) जाकर 'विद्यावाचस्पति' की पदवी प्राप्त की। गुरुकुलीय संस्कारों की अभिरुचि और अभिवृद्धि के कारण ही आपने आगे गुरुकुल ज्वालापुर हरिद्वार से 'विद्याभास्कर' की उपाधि प्राप्त की। बडे परिश्रम के साथ पूज्य सत्यप्रियजी शास्त्री पं.कर्मवीरजी, पं.विश्वमित्रजी आदि गुरुजनों की छत्रछाया में आपने अपनी शिक्षा पूर्ण की। इसके पश्चात सन १९७९ से आर्य समाज पिंपरी-पुणे के पुरोहित के रुपमें आपने संस्कारों की पवित्र गंगा को प्रवाहित किया। सोलह संस्कारों, नित्य नैमित्तिक कर्मों, धार्मिक विधियों तथा विभिन्न यज्ञों के निर्वहन हेतु आप ब्रह्मा, पुरोहित आदि बनकर जो महान कार्य कर रहे हैं, वह पुणे शहर के लिए एक प्रेरणादायी बात है। पौरोहित्य कार्य के साथ ही आर्य वीर दल के माध्यम से नवयुवकों का सर्वांगिण विकास साधा है। साथ ही आर्य विद्या मंदिर, पिंपरी में भी आप सन १९८१ से आजतक लगातार वैदिक विचारों के बीज बोये है। फलस्वरुप आपके अनेकों छात्र आपकी दी हुई संस्कार पताका को चारों दिशाओं में लहरा रहें है।

thearyasamaj.org

मनुष्यकृत जातिबन्धनों को तोडकर सन १९८१ में आपने अंतरजातीय विवाह किया और गुणधर्म स्वभावपर आधारित वैदिक विचारों का क्रियान्वयन अपने जीवन से ही किया । श्रीमती निर्मलादेवी अपने संस्कारों के अनुरप ही धर्मपत्नी के रुप में जीवन के हर मोड पर आपका साथ निभाती आयी है । आपके इस गृहस्थाश्रमरुपी लता के दो प्रसून अर्थात आपके सुपुत्र श्री प्रकाशवीर और पुत्री शीतल आपके हृदयको शीतलता प्रदान कर रहे हैं । आपने जीवन के ३६ वर्ष वैदिक धर्म का प्रचार तथा संस्कारों द्वारा समाज का निर्माण करने मे लगा दिये हैं । महाराष्ट्र के कोने-कोने तक जाकर आपने ओ३म् पताका लहरायी है । लगभग पाँच हजार विवाह वैदिक पध्दति से कराये हैं । राष्ट्रीय नेता कृषिमंत्री मा.शरदचंद्रजी पवार तथा भूतपूर्व मुख्यमंत्री मा.नारायणरावजी राणे ने आपके पौरोहित्य में विभिन्न यज्ञ संपन्न कराये हैं । आर्य समाज पिंपरी में सम्पन्न १०१ कुंडीय, ५१ कुंडीय विश्वशांति यज्ञ के ब्रह्म पद को आपने अलंकृत किया है । सामूहिक विवाह, कितनेही बटुओं के उपनयन संस्कार आदि कार्य आपने सफलतापूर्वक संपन्न किए हैं । इस प्रकार से संस्कारों की हजारों की संख्या को देखते हुए आर्य समाज ने गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्डस् में आपका नाम दर्ज किया है । श्री पं.शास्त्री के वेदप्रचार कार्यो को देखकर अनेकों संस्थाओं ने उन्हें सम्मानित किया है। आर्य समाज पिंपरी-पुणे द्वारा आपको **'आदर्श समाज सेवक'** सम्मान, विविध भारती ग्रुप द्वारा **'उत्कृष्ट सामाजिक कार्यकर्ता'** सम्मान देकर आपको गौरवान्वित किया है ।

४) पं.राजवीरजी शास्त्री (सोलापूर) -

धाराशिव(उस्मानाबाद) जनपद के अंतर्गत क्रांति के केंद्र रहे गुंजोटी गाँव में श्री शिवाजीराव भोसले के घर पूज्या माता गीताबाई ने दि.२४ अप्रैल १९५४ को एक होनहार बालक को जन्म दिया। एक भाई और चार बहनों के बीच आपका बचपन बडे मजे से गुजरा । श्रीकृष्ण विद्यालय गुंजोटी में आपने दसवी कक्षा उत्तीर्ण की । तत्पश्चात् श्री छत्रपती शिवाजी महाविद्यालय उमरगा में आपने बी.ए. द्वितीय वर्ष तक की पढाई सुचारु रुप से पूर्ण की, परन्तु डेढ-दो वर्ष की लम्बी बीमारी के कारण शिक्षा बीच में ही छोडनी पडी ।

हुतात्मा वेदप्रकाश क बलिदान से

thearyasamaj.org

पवित्र हुई गुंजोटी के धरती में आर्य समाज की विचारधारा दृढमूल हो चुकी थी । श्री दिगंबरराव देशमुख गुरुजी, श्री दिनकरराव देशपांडे गुरुजी, श्री रमेशजी ठाकुर गुरुजी आदि लोग आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता थे । कृपाशीर्वाद तथा अन्य आर्य वीरदल के कार्यकर्ताओं ने आपके जीवन की काय बदल दी । उनके प्रभाव से आप आर्य समाज में जाकर व्यायाम, संध्या, यज्ञ आदि करते रहें। डेढ दो वर्ष की बीमारी की अवस्था मानों आपके लिए नया वेदमार्ग प्रशस्त कर रही थी । इसी अस्वस्थता के अंतरालमें श्री प्रतापसिंहजी चौहान ने आपको कुछ आध्यात्मिक ग्रंथ पढने के लिए दिये । वहीं से आप पूरी तरह आर्य समाज के हो गये । १९७६ से लगभग दो वर्षो तक आप आर्य समाज गुंजोटी के आर्य वीर दल शाखा के मंत्री रहे । इसी बीच आपका परिचय श्री शिवराजजी आयनले से हुआ । उनके संपर्क में आकर आप पं. प्रियदत्तजी शास्त्री आदियों के पदचिन्हों पर चलते हुए सन १९७९ में दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार में प्रविष्ट हुए । आचार्य सत्यप्रियजी शास्त्री, पंडित विश्वमित्रजी, पं.ईश्वरचंद्रजी, पंडित रणवीरजी आदि गुरुजनों के सान्निध्य में आपने वैदिक ज्ञान अर्जित किया । स्वामी सत्यपतिजी व स्वामी देवव्रतजी की छत्रछाया में आपने योग और प्राणायाम का ज्ञान पाया । सन १९८२ से हिसार की उपदेशक शिक्षा पूर्ण होने के पश्चात् आपने कुछ समय आर्य समाज गिदडवाह (पंजाब) में प्रचार कार्य किया । तदनंतर उल्हासनगर में भी कार्य किया। वेदामृत का पान करने व कराने के पश्चात् पुनश्च एक बार आपने गुंजोटी आर्य समाज का कार्यभार संभाला और इस संस्था के मंत्री के रुप में प्रचारप्रसार हेतु धनसंग्रह आदि कार्य किये । श्रावणी वेदप्रचार सप्ताह के प्रचार का रथ अनेकों बार आपके ही विश्वसनीय नेतृत्व में सुचारु रुपसे गतिमान होता रहा है । निलंगा के आर्य महासम्मेलन हेतु निकली तीन दिनकी पदयात्रा में आपका अमूल्य योगदान रहा है । सन १९८६ से आपने सोलापुर आर्य समाज के पुरोहित के रुप में कार्य करना प्रारंभ किया । **'पुरत: हितं दधातीति पुरोहित:!'** पुरोहित शब्द की इस व्याख्या को चरितार्थ व आर्य समाज के हित के लिए आप सदैव तत्परता से कार्यरत रहे । सोलापुर के आर्यजन आपके धार्मिक नेतृत्त्व में कार्य करते हुए वहाँ पर आर्य समाज का निर्माण सफलतापूर्वक कर पा रहें हैं । प्रात:काल भ्रमण करनेवालों को कठोपनिषद की कथा सुनानी हो या पतंजली योग शिविरों में आध्यात्मिक उपदेश करना हो, अथवा सत्संगमें वैदिक ग्रंथों का अध्ययन करना हो, सभी कार्य आप बडी तन्मयता से करते रहते हैं ।

सन १९९० में आपने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा में तथा कुछ समय कर्नाटक

thearyasamaj.org

आर्य प्रतिनिधि सभा में भी अपने विचारामृत से लोगों को आप्लावित किया। पशुदया, शाकाहार आदि के विषय में अपने जो जागृति की है, वह निश्चय ही सराहनीय है। आपके महान योगदान को देखते हुए रोटरी क्लब सोलापुर (उत्तर) ने आपको **'आदर्श पुरोहित'** का पुरस्कार प्रदान किया। पद्मशाली पुरोहित सत्संग मेला की ओरसे भी आप **'आर्यभूषण'** की उपाधि से गौरवान्वित हुए है। साथही अन्य सामाजिक व धार्मिक संस्थाआं ने भी आपको पुरस्कार प्रदान दे आपके कार्य का यथोचित गौरव किया है।

५) पं.प्रियदत्तजी शास्त्री (हैदराबाद) –

अमर हुतात्मा वेदप्रकाश का बलिदान जहां हुआ, उसी गुंजोटी ग्राम में १५ जनवरी १९५१ को श्री विठोबा मोहिते के घर आपने जन्म पाया। पूज्या माता भागाबाई के प्यार दुलार में आपका बचपन व्यतीत हुआ। गुंजोटी गाँव हैदराबाद मुक्ति संग्राम का प्रमुख केंद्र रहा हैं। वहां की क्रांतिकारी मिट्टी ने आपमें भी रुढिवाद को खत्म कर नवीन विचार आत्मसात करने का साहस भर दिया हैं। स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती (भूतपूर्व पूज्य हरिश्चंद गुरुजी) के विचारों से आप प्रभावित हुए। इस क्षेत्र में आप पर वैदिक विचारों का परिणाम होना स्वाभाविक था। पंडित नरेंद्रजी की छत्रछाया ने तो आपके जीवन की दिशा ही बदल दी। उन्होंने आपके युवा मानस पर ऐसा प्रभाव डाल दिया कि आप वैदिक विचारों के उच्च से उच्चतर लक्ष्य को पाते गए।

महाराष्ट्र से गुरुकुलों में पढने के लिए जिन्होंने सर्वप्रथम पहल की, उस पहली पीढी में से आप एक हैं। पंडित नरेंद्रजी की प्रेरणा से आप सर्वप्रथम गुरुकुल यमुनानगर में सन १९७१ को प्रविष्ट हुए। कतिपय व्यवधानों के कारण आप कुछ समय बाद हिसार गए। वहां स्व.पं.विश्वमित्रजी तथा आप सहपाठी के रुपमें पं.सत्यप्रियजी शास्त्री के चरणों में वैदिक विचारधारा को अवगत करते रहें हैं। दयानंद ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार (हरियाणा) उपदेशकों तथा पुरोहित वृंदों को प्रशिक्षित करने का प्रमुख केंद्र रहा है। आपकी पीढी के सभी स्नातक वहाँ से प्रशिक्षित होकर सफल उपदेशक के रुप में पूरे भारत वर्ष में कार्यरत हैं। वहाँ से आपने विद्यावाचस्पति और तदनन्तर ज्वालापुर महाविद्यालय से आपने विद्याभास्कर की उपाधि प्राप्त की।

thearyasamaj.org

इसके पश्चात आपने वैदिक सिद्धांतों के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा जीवन लगाने का संकल्प किया। उसी संकल्प के फलस्वरुप आर्य समाज माडल टाऊन (पानीपत,हरियाणा) में आप लगभग उन्नीस वर्ष तक पुरोहित रहें । वैदिक सिद्धांतों का प्रचार करने की जिम्मेदारी जितनी पहली पीढी पर थी, उतनी शायद गतानुगतिक बाद की पीढीयों पर नही रही । इसी कारण आपका कार्य अधिक महत्व रखता हैं । विनम्रता के साथ दृढता, विचारों में सुस्पष्टता तथा संवेदनशीलता के कारण आप आर्य जगत में सुप्रसिद्ध हो चुके हैं । दशहरे के अवसरपर प्रतिवर्ष एक सर्वोत्तम विद्वान को रथ में बिठाकर पूरे हैदराबाद में जुलूस निकाला जाता हैं। इस वर्ष इस सम्मान के आप हकदार बनें, यह आर्यजगत् के लिए गौरव की बात हैं

६) **पं.सुधाकरजी शास्त्री –** (सभाउपदेशक)

माता रुक्मीणी व पिता महादेव विभुते जैसे कृषक परिवार में दि.१८ अगस्त १९५८ को पं.सुधाकरजी शास्त्री का जन्म हुआ । दसवी कक्षा तक की पढाई गुंजोटी जैसे क्रांतिकारी ग्राम के श्रीकृष्ण विद्यालय से पूर्ण करने के पश्चात आपने चाचा श्री अण्णाराव पाटील (विज्ञानमुनि) की प्रेरणा से संस्कृत विद्या ग्रहण करने तथा उपदेशक बनने हेतु दयानंद ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार(हरियाणा) पहुँचे । चार वर्ष तक आचार्य सत्यप्रियजी शास्त्री एवं पितृतुल्य भ्राता स्व.पं.विश्वमित्र शास्त्री के सान्निध्य में रहकर वैदिक सिद्धांत, आर्षसाहित्य, सोलह संस्कार एवं ऋषिकृत आर्ष ग्रंथों का अध्ययन कर जीवन को वेदानुरुप बनाया । तत्पश्चात् **'विद्यावाचस्पति'** एवं शास्त्री के उपाधियां अधिगत कर आर्य समाज फतेहाबाद (हरियाणा) में अवैतनिक पुरोहित बनकर लगभग सोलह वर्ष तक सेवायें दी । इस संस्था से जुडकर अध्यापक, व्यायामशिक्षक, प्रचारक आदि अनेक रुपो में आपने समर्पित भाव से कार्य किया ।

मानवता के सजगप्रहरी पूज्य स्वामी श्रद्धानंदजी का आपसे छात्रावस्था से ही संपर्क रहा है । परिणामतः उन्हीं की प्रेरणा व मार्गदर्शनसे आपका हैद्राबाद स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी श्री नामदेवराव पाखरसांगवे(निलंगा) की कन्या सौ.शोभाबाई से सन १९८८ में अंतरजातीय विवाह हुआ, जिसे दोनों परिवारों ने सहर्ष सम्मति देकर जातिप्रथा के निर्मलन कार्य में क्रांतिकारी कदम उठाया ।

१९९६ में आप हिसार छोडकर महाराष्ट्र पधारें । यहाँ पर अहमदपुर की संस्था ग्रामीण विकास लोकसंस्था से जुडकर

thearyasamaj.org

आपने लगभग सात वर्ष तक ग्रामीण लोगों की सेवा की। देहाती लोगों को दुर्व्यसनों से दूर कर सुसंस्कारित किया। इस संस्था में समर्पित भाव से काम करने के फलस्वरुप आप विविध संस्थाओं द्वारा सम्मानित हुए।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का नेतृत्व जब स्वामी श्रद्धानंदजी एवं डॉ.सु.ब.काळे (ब्रह्मुनिजी) जैसे सशक्त व समर्थ आर्य नेताओं के कंधों पर आया, तब डॉ.ब्रह्ममुनिजी की प्रेरणा से आप इस सभा के **'महोपदेशक'** के रुप में नियुक्त हुए। तब से आजतक आपने महाराष्ट्र के विविध नगरों-ग्रामों में घूम-घूम कर वैदिक धर्म का बडी निष्ठा के साथ प्रचार व प्रसार किया। सभा द्वारा समय-समय पर आयोजित श्रावणी पर्व, संस्कार शिविर, वैदिक व्याख्यानमाला, पुरोहित प्रशिक्षण शिविर आदि अनेक माध्यमों से आप आर्य विचारों को जन-जन तक पहुँचाते रहते हैं। साथ ही जगह-जगह पर पहुँचकर नित्य व नैमित्तिक यज्ञों तथा सोलह संस्कारों को प्रसारित करते रहे हैं। एक कुशल वक्ता व जागरुक पुरोहित के रुप में आपने अपना जीवन वेद धर्म के संदेश को सामान्य लोगों तक पहुँचाने में व्यतीत किया है और कर रहे हैं।

महाराष्ट्र आर्य प्र.सभाद्वारा सम्मानित उपरोक्त छः पुरोहित वृन्दों को ईश्वर दीर्घायू व आरोग्य प्रदान करें, ताकि उनके द्वारा वैदिक षोडशसंस्कारों व आर्य विचारों का प्रसार व प्रचार अधिक मात्रा में होता रहे!

- नरेंद्र वैदिक अनुसंधान केंद्र,
स्वामी श्रद्धानंद गुरुकुल,
परली-वैजनाथ जि.बीड

उदगीर में 'आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर'

सभा के निर्देशन में आर्य समाज उदगीर द्वारा आगामी दि. २५ मई से १ जून २०१४ तक आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर का आयोजन किया गया है। इस शिविर में वैदिक विद्वानों व विदुषियों के सान्निध्य में कक्षा ५ से पदवी तक की छात्राओं (कन्याओं) को उनके सर्वंकश विकास हेतु प्रशिक्षण दिया जायेगा। वैदिक विचारों के माध्यम से कन्याओं मे मानवीय मूल्यों व्र संस्कारों का बीजारोपण किया जायेगा। दिनभर की व्यस्त दिनचर्या में योगासन, प्राणायाम, विविध क्रीडा प्रकार, वैदिक यज्ञ, विभिन्न विषयोंपर व्याख्यान, भजन, शंका समाधान आदि कार्यक्रम होंगें।

आमंत्रित विद्वान - आचार्य हरिसिंहजी आर्य (प्रधानाध्यापक, आर्य वीर दल, दिल्ली), पं. सुधाकरजी शास्त्री, पं. प्रतापसिंहजी चौहान, मारूतीराव घोरपडे, प्रा.डॉ. शारदा तुंगार, श्रीमती इंदुमती सावंत, सौ.सीताबाई निरमनाळे आदि।

thearyasamaj.org

लातूर में आर्य समाज का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज गांधी चौक, लातूर का ७९ वां वार्षिकोत्सव गत दि.१८, १९ व २० मार्च को उत्साहपूर्वक मनाया गया। वेदपारायण यज्ञ, धार्मिक, आध्यात्मिक व सामाजिक विषयों पर भजन, प्रवचन, महिला संमेलन, शंकासमाधान आदि कार्यक्रमों से युक्त इस उत्सव में शहर तथा परिसर के महिला, पुरुष तथा बच्चों ने बढ-चढकर हिस्सा लिया । बिजनौर (उ.प्र.) से पधारे वैदिक विद्वान पं.विष्णुमित्रजी वेदार्थी ने विभिन्न विषयों को श्रोताओं के सामने रखा । आर्य भजनोपदेशक पं.टीकमसिंहजी आर्य द्वारा प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत भजनों व गीतों से श्रोतृवर्ग बहुत ही सन्तुष्ट रहा। श्री विष्णुमित्रजी की अस्वस्थता के कारण पं.टीकमसिंहजी ने भजनों के साथ ही प्रवचन की भी अधिकतर जिम्मेदारी सम्भाली । तीनों दिन प्रातः ७ से १० तक यज्ञ, भजन व धार्मिक प्रवचन तथा रात्रि में ८ से १० तक भजन व सर्वसमावेशक विषयों पर व्याख्यान होते रहे ।

दि.२० मार्च को दोपहर आयोजित **'आर्य महिला संमेलन'** बहुत ही सफल रहा । व्यंकटेश महाविद्यालय, उस्मानाबाद की प्राचार्या डॉ.अनार साळुंके की अध्यक्षता में सम्पन्न इस सम्मेलन में प्रा.डॉ.कुमुदिनी भार्गव, श्रीमती इन्दुमति सावंत, सौ.ललिता चिद्री श्रीमती उत्तमा यति आदियों ने विचार रखें । श्रीमती सेवायति एवं सौ.कंचन शास्त्री ने भजन प्रस्तुत किये । लातूर की यह आर्य समाज की पुरानी समाज मानी जाती है । अनेकों विद्वानों व भजनोपदेशकों को बुलाकर हर हमेशा कार्यक्रमों का सफल आयोजन होता रहता हैं । इस वार्षिक उत्सव की सफलता के लिए प्रधान एड.हरिश्चंद्र पाटील, उपप्रधान ओमप्रकाश पाराशर, मंत्री प्रा.शरदचंद्र डुमणे, बाबुरावजी तेरकर, उपमंत्री धीरेंद्र पाटील, कोषाध्यक्ष अविनाश परांडेकर, वैजनाथराव हालिंगे आदियों ने प्रयत्न किये ।

thearyasamaj.org

आध्यात्मिक व्यास का वार्षिकोत्सव व संगोष्ठी

वैदिक आध्यात्मिक न्यास, अजमेर का द्वितीय वार्षिक स्नेह सम्मेलन एवं संगोष्ठी ७,८,९ फरवरी २०१४ को उसके उपकार्यालय वानप्रस्थ साथक आश्रम, आर्यवन, रोजड, गुजरात, मे हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुये । इस सम्मेलन में जहाँ विद्वानों को परस्पर परिचय व आदान-प्रदान का अवसर प्राप्त हुआ, वहीं पूज्य स्वामी सत्यपतिजी के दर्शन व आशीर्वचनों का लाभ भी प्राप्त हुआ । संगोष्ठी के श्रोताओं से भरे विभिन्न सत्रों में अनेक विषयों पर सार्थक परिचर्चाएँ हुई, भजन,प्रवचन हुये व जिज्ञासा समाधान भी किया गया । दोनों समय सामूहिक उपासना के कार्यक्रम से भी सदस्य लाभान्वित हुये । विभिन्न विद्वानों ने अपने सार्थक कार्यक्रमों अनुभवों शोधों, प्रश्नों व समस्याओं से अन्यों को अवगत कराया, उन पर अन्य विद्वानों के विचार, समाधान आदि भी सुनने को मिले।

पूज्यपाद स्वामी सत्यपतिजी के मार्गदर्शन व निर्देशन में इस तीन दिवसीय संगोष्ठी में विभिन्न सत्रो की अध्यक्षता आचार्य ज्ञानेश्वरार्यजी, स्वामी ऋतस्पतिजी, आचार्य सत्यप्रकाशजी, आचार्य आनन्दप्रकाशजी, स्वामी अमृतानंदजी आदियों ने की । विविध विषयों पर चली संगोष्ठी में वैदिक विद्वान सर्वश्री आचार्य सोमदेवजी, आचार्य सत्यजितजी, आचार्य सनत्कुमारजी, ब्र. अरूणजी, आचार्य रवीन्द्रजी, आचार्य सुखदाजी, रामचन्द्रजी, स्वामी वेदपतिजी, राजेश भागवत, आचार्य सत्यन्द्रजी,आचार्य शीतलजी, आचार्य हरीशजी, प्रो.शत्रुंजयजी रावत, आचार्य आशीषजी आदियोंने भाग लेकर अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये, जिसमें जिज्ञासुओं द्वारा पूछी गयी शंकाओं का सार्थक समाधान किया गया ।

परभणी में मनाया गया 'वैदिक होलिकोत्सव'

अनेकों वर्षों से चली आ रही बुरी परम्पराओं को तोडते हुए परभणी के उत्साही आर्य कार्यकत्ताओं ने इस वर्ष अपना होलिकोत्सव पर्व पूर्ण वैदिक पद्धति से मनाया । आर्य समाज के प्रधान श्री विजयकुमारजी अग्रवाल के नेतृत्व में प्रातः बृहद्यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें चार यजमान दम्पतियों ने सश्रद्ध आहुतियां प्रदान की । तत्पश्चात् आर्य नर-नारियों द्वारा सामूहिक भजन प्रस्तुत किये गये । तद्नंतर सर्वश्री पं. लक्ष्मणराव आर्य (वेदप्रचार अधिष्ठाता सभा), रंगनाथराव तिवार, डॉ.नयनकुमार आचार्य, प्रा.डॉ.प्रकाश कदम, विजयकुमार अग्रवाल

thearyasamaj.org

आदियों ने अपने सम्बोधन में होली पर्व का ऐतिहासिक महत्व, उसका स्वरूप विशेषताएं, तथा आदर्शों पर प्रकाश डाला । अन्त में आर्यजनों ने एक दूसरों पर सुगन्धीत फूलों की वर्षा करते हुए आनंन्दोत्सव मनाया । शान्तिपाठ के पश्चात् सुरूचि भोजन के साथ इस अभिनव समारोह का समापन हुआ ।

इस सम्पूर्ण कार्यक्रम का आयोजन व नियोजन श्री अग्रवाल परिवार ने किया थी, जिसकी सफलता के लिए आर्यजन सर्वश्री डॉ.प्रकाशजी कदम, बालकिशनजी बिर्ला, डॉ.औंढेकर, वैद्य बाबुराव आर्य, देवकते, मुंडे, पांचाळ आदियों ने सहयोग दिया।

शोक समाचार

रत्नप्रकाशजी तिवारी का देहावसान

आर्य समाज किल्लेधारूर(जिला बीड) के उपप्रधान तथा वैदिक विचारों के प्रखर अनुयायी श्री रत्नप्रकाशजी इंद्रमोहन तिवारी का दि.३० अप्रैल २०१४ को प्रात: १०.३५ बजे पुणे में हृदयाघात केकारण अकस्मात दु:खद निधन हुआ । उनकी आयु ६३ वर्ष की थी ।

श्री तिवारी अपने पश्चात् माताजी श्रीमती लीलाबाई, सहधर्मचारिणी श्रीमती रमाबाई, तीन कन्याएँ श्रुति, श्वेता व श्रेया तथा दो भाई आदि से भरा परिवार छोडकर संसार से विदा हो गये । पुणे की एक प्राईवेट कंपनी में कार्यरत कन्या के विवाह की तैय्यारी में वे जुटे थे। इस कारण उन्हें धारुर से पुणे जाना पडा । इसी अंतराल में वहीं पर उन्हें हृदय की शिकायत हुई और मास्टर दीनानाथ मंगेशकर अस्पताल में भरती कराया गया । तीन दिन के भीतर उनके स्वास्थ्य में कुछ सुधार नहीं हुआ और अन्त में उन्होंने जीवनलीला समाप्त की। इस दुखद घटना से समग्र तिवारी परिवार शोकसागर में डूब गया है और आर्य समाज किल्ले धारुर की अपरिमित हानि हुई है।

श्री तिवारीजी होमिओपैथी चिकित्सक के रुप में धारुर परिसर में प्रसिद्ध थे। आर्य समाज के सक्रिय कार्यकर्ता के रुप में उन्होंने भूमिका निभाई । महर्षि दयानंद के पदचिन्हों पर चलते हुए उन्होंने समाज के सम्मुख एक सच्चे वेदधर्मी के रुप में पहचान बनायी थी । नित्यप्रति प्रात:भ्रमण, योगाभ्यास, प्राणायाम, वैदिक ग्रंथो का स्वाध्याय करनेवाले श्री तिवारीजी यथासमय लेखनकार्य भी करते थे । वैदिक गर्जना के

thearyasamaj.org

साथ ही आर्य जगत् की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में उनके कईं लेख छप चुके हैं। सभी से मधुर व सौहार्दपूर्ण व्यवहार, स्नेहशील वृत्ति, सामाजिक सहृदयता, सभीसे निरंतर सम्पर्क, सेवाभाव, आदरातिथ्य, सादगीपूर्ण जीवन आदि गुणों के कारण वे सबके प्रिय बन गऐ थे। वैदिक तत्वज्ञान पर उनकी गहरी निष्ठा थी। उनके पिताजी श्री इंद्रमोहनजी आर्य समाज किल्लेधारुर के प्रतिष्ठित प्रधान व सक्रिय कार्यकर्त्ता के रुप में प्रसिद्ध थे।

ऐसे एक कर्मठ आर्य कार्यकर्त्ता के आकस्मिक निधन से धारुर सहित परिसर की आर्य समाजों का काफी नुकसान हुआ है। दिवंगत श्री तिवारी के पार्थिव पर पुणे की वैकुंठधाम विद्युतदाहिनी में अंतिम संस्कार किये गए। तीसरे दिन उनका परिवार किल्लेधारुर पधारने पर घर में शांतियज्ञ सम्पन्न हुआ। डॉ.नयनकुमार आचार्य के ब्रह्मत्व में समापन्न शांतियज्ञ में वैदिक मन्त्रों से दुखी परिवार ने आहुतियाँ प्रदान की। इस अवसर पर सर्वश्री पं.तानाजी शास्त्री, मंत्री एड.प्रमोदकुमार मिश्रा, महाराष्ट्र सभा के मार्गदर्शक डॉ.ब्रह्ममुनिजी, पूर्व नगराध्यक्ष डॉ.स्वरुपसिंहजी हजारी, पुरोहित पं.भारतजी कापसे आदियों ने दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किये। पं.शक्तिसिंहजी आर्य ने स्मृतिगीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर आर्यजन, प्रतिष्ठित नागरिक एवं परिजन उपस्थित थे।

एड्.जोगेन्द्रसिंह चौहान को बन्धुशोक

प्रान्तीय सभा के अन्तरंग सदस्य तथा आर्य समाज सम्भाजीनगर(औरंगाबाद) के कोषाध्यक्ष एड.श्री जोगेन्द्रसिंह चौहान के छोटे भाई श्री देवेन्द्रसिंह नरेन्द्रसिंह चौहान का दि.२१ अप्रैल २०१४ को रात्रि में अल्पसी बिमारी के कारण अकस्मात् देहावसान हो गया। वे केवल ३७ वर्ष के थे।

उनके पश्चात् घर में माताजी, पत्नी, पुत्र अक्षत्, कन्या नन्दिनी, भाई-बहनें आदि परिवार है। श्री देवेन्द्रसिंहजी सम्भाजीनगर शहर में टाईल्स का व्यापार करते थे। उनके अचानक ही चले जाने से चौहान परिवार शोकसागर में डूब गया है। स्व.चौहान के पार्थिव पर दूसरे दिन दोपहर कैलाशनगर स्मशानभूमि में अत्यंत शोकाकुल वातावरण में अन्तिम संस्कार किये गये। सभा के उपप्रधान दयारामजी बसैये के पौरोहित्य में यह दाहकर्म पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ।

दिवगंत आत्माओं की शान्ति तथा सद्गति के लिए ईश्वर से कामनाएँ!

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश

सूक्ष्मातिसूक्ष्म ईश्वर

अणोरणीयान् महतो महीयान् आत्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम् ॥
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुः प्रसादान्महि मानमात्मनः ॥

(कठोपनिषद् २/२०)

सूक्ष्मानिसूक्ष्म व मोठ्यात मोठा महान सर्वव्यापक असा परमात्मा या प्राणिमात्राच्या अंतःकरणात स्थायीरूप आहे. बुद्धिरूपी गुहेत स्थिर असलेल्या त्या ईश्वराला निष्काम कर्म करणारा, हर्ष शोकाने विरहित असा आत्मा सत्य व असत्या विषयीच्या विवेकाला धारण करणाऱ्या मेधा बुद्धीच्या कृपेने, व पवित्र भावनेनेच समजू शकतो (जाणू शकतो.)

दयानंदांची अमृतवाणी

प्राणायाम विधी

प्रच्छर्दनविधारणाभ्यां वा प्राणस्य । (योगसूत्र १/३४)

ज्या प्रमाणे अतिवेगाने बमन झाल्यास पोटातील अन्न व पाणी बाहेर पडते त्याप्रमाणे प्राणाला वेगाने बाहेर काढावयाचे असेल, तेव्हा मूलेंद्रियाला वर ओढून वायु बाहेर फेकावा. जोपर्यंत मूलेंद्रियाला वर ओढून धरले जाते, तो पर्यंत प्राण बाहेर राहतो. याच प्रमाणे प्राण जास्त वेळपर्यंत बाहेर राहू शकतो. जेव्हा गुदमरल्यासारखे होईल, तेव्हा हळूहळू श्वास आत घ्यावा. हीच प्रक्रिया सामर्थ्य व इच्छा असेल तो पर्यंत करीत राहावे. त्याच वेळी मनातल्या मनात ओ३म् चा जप करावा. असे केल्याने आत्मा व मन हे पवित्र व स्थिर होतात.

(सत्यार्थ प्रकाश-सहावा समुल्लास)

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः

सुखाने कसे राहावे ?

दिवसेनैव तत्कुर्याद् येन रात्रौ सुखं वसेत् ।
अष्टमासेन तत्कुर्याद् येन वर्षाः सुखं वसेत् ॥
पूर्वे वयसि तत्कुर्याद् येन वृद्धः सुखं वसेत् ।
यावज्जीवने तत् कुर्याद् येन प्रेत्य सुखं वसेत् ॥

(विदुरनीती ३/६७,६८)

अर्थः- माणसाने दिवसभरात अशी कामे करावीत की जेणे करून (कोणतीही चिंता न करता) रात्री सुखाने झोपता येईल, आठ महिण्यांमध्ये अशी चांगली (कष्टाची) कामे करावीत की जेणे करून वर्षाऋतूत (पावसाळ्यात-चिखला पाण्याच्या दिवसात ४ महिने) सुखाने घालविता येतील, आयुष्याच्या पूर्वार्धात (तरूण वयात) अशी उत्तम कामगिरी बजावावी की ज्यामुळे म्हातारापणात आनंदाने राहाता येईल. आणि आयुष्यभर (जीवनभर) अशी सत्कर्मे करावी की जेणे करून मृत्युनंतर परलोकात (पुढील जन्मात) श्रेष्ठ मानव जन्म धारण करूण आनंदात जगता येईल. (किंवा मोक्ष सुखाचा आस्वाद घेता येईल.)

देशात सुंस्कारांची जडण घडण होण्याच्या व वैदिक सोळा संस्कार आणि विशुद्ध यज्ञ संस्कृतीचा प्रसार व प्रचार करण्याच्या पवित्र उद्देशाने महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेचा वार्षिक उपक्रम

* राज्यस्तरीय पुरोहित प्रशिक्षण शिबिर *

-: दिनांक २७ जून ते ६ जुलै २०१४ :-

स्थळ - श्रद्धानंद गुरूकुल आश्रम, परळी-वैजनाथ जि.बीड

प्रमुख प्रशिक्षक - प्रो.डॉ. दीनदयाळजी वेदालंकार

अधिव्याख्याते, वेदविभाग, गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार)

- अन्य मार्गदर्शक -

पं.सुधाकरजी शास्त्री (सभा उपदेशक) **पं.प्रतापसिंहजी चौहान** (सभा भजनोपदेशक)

आज समाजात वैदिक १६ संस्कारांची परंपरा रूजविणे अत्यंत गरजेचे आहे. आपण एक कुशल व उत्तम पुरोहित बनून परोपकाराचे व राष्ट्र संस्कृती रक्षणाचे हे पवित्र कार्य करू शकता ! तरी या शिबिरात आपण अवश्य सहभागी व्हावी.

प्रवेश शुल्क
रू. १०० फक्त

या संदर्भात विस्तृत माहितीपत्रे आर्य समाजांना पाठविण्यात येत आहेत.

-विनीत -

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा, परळी-वै.

thearyasamaj.org

(श्री/सौ.मुंदडा गौरव विद्यालयीन निबंध २०१३-१४स्पर्धेत प्रथम पुरस्कार प्राप्त दोन निबंधांपैकी एक निबंध-)

महर्षि दयानंदांचे सामाजिक विचार

– आशुतोष अनिल गायकवाड

स्वामी दयानंद सरस्वती हे भारतीय समाजाच्या इतिहासातील एक क्रांतीकारक समाजसुधारक व धर्मसुधारक होते. ते भारतातील एक थोर विद्वान पंडित व आर्य समाजाचे संस्थापक होते.

स्वामीजींच्या मते वैदिक धर्म हाच खरा धर्म असून वैदिक समाज हा सर्व प्रकारच्या अनिष्ट प्रथापासून मुक्त होतो. ह्या समाजात अस्पृश्यता, जातीव्यवस्था नव्हती. स्त्रियांना समान दर्जा होता. 'सत्यार्थ प्रकाश' हा ग्रंथ लिहून त्यांनी वेदांचा खरा अर्थ स्पष्ट केला. आध्यात्मिक व नैतिक जीवनाच्या प्रगतीसाठी **'वेदाकडे परत चला'** अशी हाक समस्त भारतीयांना दिली. वेदातील ज्ञानाचा प्रसार करण्यासाठी व हिंदू धर्मात सुधारणा घडवून आणण्यासाठी व अनिष्ट सामाजिक ग्रंथाचे निर्मूलन करण्यासाठी त्यांनी आर्य समाजाची स्थापना कली. आर्य समाजाच्या माध्यमातून त्यांनी समताधिष्ठित समाजाचा पाया रचला. आर्य समाजाने मूर्तिपूजा, पशुबळी, पूर्वजपूजा, जातीव्यवस्था, अस्पृश्यता, बालविवाह, बहुदेवतावाद, सतीप्रथा इत्यादींना वैदिक मान्यता नाही म्हणून तीव्र शब्दात निषेध केला.

स्वामी दयानंद सरस्वती हे केवळ धर्मसुधारक नव्हते, तर कर्ते समाजसुधारक होते. भारतीय समाजातील अनिष्ट चालीरीती विरुद्ध त्यांनी सामाजिक विचार मांडून थांबले नाहीत, तर सर्व आयुष्य समाजसेवेसाठी घालविले. त्यांचे सामाजिक विचार व कार्य पुढीलप्रमाणे आहे.-

समताधिष्ठित समाजाचा पाया रचून समानतेची वागणूक व शिकवण दिली. सर्व लोक जन्माने समानच आहेत. जन्माने कोणी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य वा शूद्र नसतो तर व्यक्ती जो व्यवसाय निवडते, त्यावर ते अवलंबून असते. शिवाय वर्ण हे एकमेकांना पूरक असून कोणीही श्रेष्ठ अगर कनिष्ठ नाही असा उपदेश स्वामीजींनी केला. आर्य समाजाच्या सर्व सदस्यांना त्यांनी समानतेची वागणूक दिली. जात व पंथ यावर आधारित भेदभाव त्यांनी कधीच केला नाही.

स्वामीजींनी जातीव्यवस्थेला प्रखर

thearyasamaj.org

विरोध केला. वर्णव्यवस्था ही आनुवांशिक नसून मानवनिर्मित आहे हे त्यांनी ठासून सांगितले. वेदांमध्ये अस्पृश्यतेचा उल्लेख नाही म्हणून त्यांना अस्पृश्यता व जातिव्यवस्था मान्य नव्हती. कोणतीही व्यक्ती जन्माने लहान अगर मोठी नसते तर ती आपल्या कर्तृत्वाने मोठी होऊन आपले समाजातील स्थान निर्माण करते, असे ते मानत असत. त्यांनी अस्पृश्यतेविरुद्ध चळवळ उभी करुन अस्पृश्यता नष्ट करण्याचा प्रयत्न केला. आंतरजातीय विवाहास प्रोत्साहन दिले. अस्पृश्यता हा हिंदू समाजाला लागलेला सर्वात मोठा रोग आहे म्हणून त्यांनी अस्पृश्यता घालविण्यासाठी कृतियुक्त प्रयत्न केले. महर्षींनी एका न्हाव्याची भाकर खाऊन अस्पृश्यता ही खुळचट व अमानवीय कल्पना आहे हे सिद्ध करुन दाखविले. जन्माद्वारे नव्हे तर कर्माद्वारे व्यक्तीला श्रेष्ठत्व प्राप्त होत असते, हा विचार त्यांनी भारतीयांना दिला.

स्वामीजींनी बालविवाह प्रथेविरुद्ध आवाज उठविला. बालविवाहाचे दुष्परिणाम सभावर कसे होतात आणि ही प्रथा कशी वाईट आहे ? याविषयी त्यांनी समाजप्रबोधन घडवून आणले. विवाहाची वयोमर्यादा निश्चित करताना मुलाचे वय २५ वर्षे व मुलीचे वय १६ वर्षे असावे, असे त्यांनी स्पष्ट केले.

स्वामीजींनी विधवा पुनर्विवाहास प्रोत्साहन दिले. विधवा पुनर्विवाहाचे समर्थन करतानाच त्यांनी लोकांना रानटी व सनातनी 'सतीप्रथा' बंद करा असे आग्रहाने सांगितले. सक्तीच्या विधवावस्थेमधून विधवांची सुटका व्हावी यासाठीच स्वामीजींनी विधवा पुनर्विवाहाचे समर्थन केले. त्यांनी विधवासाठी 'नियोग' पध्दती सुचविली.

त्याचबरोबर स्वामीजी स्वदेशीचे अत्यंत कडवे समर्थक होते आणि म्हणून त्यांनी देशात उत्पादित झालेल्या वस्तुंचाच वापर करावा असा आग्रह धरला. तसेच त्यांनी परदेशी वस्तूवर बहिष्कार टाकला. ते लोकशाही व स्वयंशासित शासनव्यवस्थेचे समर्थक होते.

भारतातील ब्रिटीश राजवटीने देशाच्या कल्याणाच्या दृष्टीने कांहीच योगदान दिलेले नाही, हा विचार लोकांच्या गळी उतरविण्याचा स्वामीजींनी प्रयत्न केला. ब्रिटीश राजवटीने इतर कोणाहीपेक्षा ब्रिटीशांचाच अधिक फायदा झालेला आहे असे विचार मांडून आर्य समाजाने लोकांमध्ये राष्ट्रभावना जागृत करण्याचा प्रयत्न केला. लाला लाजपतराय, स्वामी

thearyasamaj.org
श्रद्धानंद, बिपीनचंद्र पॉल, असे महान विचारवंत आर्य समाजाच्या तालमीत तयार झाले. त्यांनी राष्ट्रीय चळवळीत भाग घेऊन लोकांना संघटित करून स्वातंत्र्य लढा उभा केला.

आर्य समाजाच्या माध्यमातून स्वामीजींनी पंजाबमधील फिरोझपूर येथे पहिले अनाथाश्रम सुरु केले व त्यानंतर संपूर्ण देशभरात त्यांनी अनाथाश्रमाची साखळीच उभी केली. विधवा व परितक्त्या स्त्रियांसाठी निवासाची व्यवस्था करुन त्यांना उपयुक्त व्यवसायांचे प्रशिक्षण देऊन त्यांना स्वावलंबी बनवून सुयोग्य अशा पुरुषांशी त्यांचा पुनर्विवाह लावून देऊन भारतीय समाजासमोर एक आदर्श निर्माण करण्याचे महतकार्य स्वामीजींनी केले.

त्यांचे परमशिष्य स्वामी श्रद्धानंद यांनी इस्लाम व ख्रिश्चन धर्म स्वीकारलेल्या हिंदूंना परत हिंदू धर्मात घेण्यासाठी 'शुद्धी चळवळ' चालू केली. हिंदू धर्म सोडून इतर धर्मात जाऊ इच्छिणाऱ्यांना रोखण्याचा व मागासवर्गीय आणि दलित वर्गाचा सामाजिक दर्जा उंचावण्याचा प्रयत्न त्यांच्या शिष्यांनी केला. शुद्धी चळवळीमुळे लोकांचे पुन:धर्मांतर होऊन ते हिंदू प्रवाहात परत आले. शुद्धी चळवळीचा धर्मांतरावर खूप मोठा परिणाम झाला.

स्त्रियांना पुरुषांच्या बरोबरीचा दर्जा दिला जावा व राजकारणात निवडणूक तत्वांचा अवलंब करावा, असे स्वामीजींना वाटत असे. कनिष्ठ जातींच्या स्त्रियांनाही शिक्षणाचा, वेदाचे अध्ययन करण्याचा व व्यक्तिमत्व विकासाचा हक्क प्राप्त व्हावा असे त्यांचे मत होते. ह्या तात्विक विचारामुळे लोकांमध्ये स्वातंत्र्य, समता व बंधुता ह्या लोकशाही मूल्याविषयी जागृती निर्माण होण्यास मदत झाली. आर्य समाजाच्या सामाजिक व धार्मिक संघटनेने लोकशाही तत्वांवर आधिक भर दिल्यामुळे लोकशाही सवलीकरणास प्रोत्साहन मिळाले.

स्वामीजींनी भारतीय समाजातील विषमता व अनिष्ट चालीरीती नष्ट करण्यासाठी आर्य समाजाची स्थापना केली व आर्य समाजाची दहा मार्गदर्शक तत्वे सांगितली. त्या मार्गदर्शक तत्वातून स्वामीजींचे सामाजिक विचार स्पष्ट होतात.

१.देव हाच सर्व प्रकारच्या यथार्थ ज्ञानाचा प्राथमिक स्त्रोत आहे.

२.देव हा सर्व सत्य, सर्वज्ञानी, सर्व शक्तिमान, अमर्त्य, विश्वनिर्माता असून तो एकटाच पात्र आहे.

३.वेद हे यथार्थ ज्ञानाचे ग्रंथ आहेत.

४.आर्यांनी नेहमी सत्य स्वीकारण्यासाठी व असत्याचा त्याग करण्यासाठी सिद्ध असले

thearyasamaj.org

पाहिजे.

५.बरोबर काय व चुकीचे काय आहे याची खात्री करून घेतल्याबरच सर्व प्रकारच्या कृती कराव्यात.

६.जगाच्या भौतिक, आध्यात्मिक व सामाजिक उन्नतीस चालना देणे, हे आर्य समाजाचे प्रमुख ध्येय आहे.

७.सर्व व्यक्तीशी प्रेमाने व न्यायाने वागले पाहिजे.

८.अज्ञानाचा नाश करून ज्ञानवृद्धी केली पाहिजे.

९.प्रत्येकाने स्वत: बरोबरच इतरांच्या भल्याचा विचार केला पाहिजे.

१०.व्यक्तिगत उन्नतीऐवजी संपूर्ण मानव जातीच्या उन्नतीस प्राधान्य दिले पाहिजे.

ह्या दहा मार्गदर्शक तत्वावरुन स्वामीजींच्या उदात्त सामाजिक विचारसरणीची कल्पना येते. स्वामीजींनी हे विचार अखिल मानव जातीच्या कल्याणासाठी मांडले. आर्य समाजाच्या शाखा आफ्रिका, फिजी, त्रिनिदाद, सिंगापूर, बँकॉक, मॉरिशस इ. देशात सुद्धा स्थापन केल्या. यामुळे देशातील व परदेशातील लोकांना भारताची समृद्ध प्राचीन वैदिक संस्कृती समजण्यास मदत झाली. महर्षींचे विचार भारतापुरते मर्यादित नव्हते तर ते समस्त मानवजातीसाठी होते. अशा ह्या महामानवास त्रिवार वंदन करुन मी माझ्या विचारांना इथेच पूर्णविराम देतो.

– इयत्ता १० वी (तुकडी ब)
सरस्वती विद्यालय, प्रकाशनगर,
लातूर-४१३५३१.

॥ ओ३म् ॥

आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली

आयु के ५०-६० वर्ष बिता चुके तथा गृहस्थाश्रम की जिम्मेदारियों मुक्त, अपनी शासकीय व अशासकीय नोकरियों से सेवानिवृत्त हो चुके तथा सांसारिक मोहबन्धनों से ऊब चुके सज्जन महानुभावों, दम्पतियों के लिए स्वास्थ्य रक्षा, सेवा, स्वाध्याय, आध्यात्मिक साधना हेतु आर्य वानप्रस्थ आश्रम, परली वैजनाथ जि बीड-(महा.) में पूरी व्यवस्था है। वे यहां पर आकर ठहर सकते हैं।

साथ ही अपनी सेवाओं में कार्यरत व्यक्ति, व्यापारी लोग भी वर्ष में एक या दो बार आकर दस - पन्द्रह तक रह सकते हैं। यहांपर प्राकृतिक व आयुर्वेदिक चिकित्सा, ध्यान धारणा केंद्र, वैदिक ग्रन्थालय आदि द्वारा स्वास्थ रक्षा योग-साधना, स्वाध्याय-चिंतन का लाभ उठा सकते हैं। सभी सज्जनों का स्वागत हैं!

- व्यवस्थापक

thearyasamaj.org

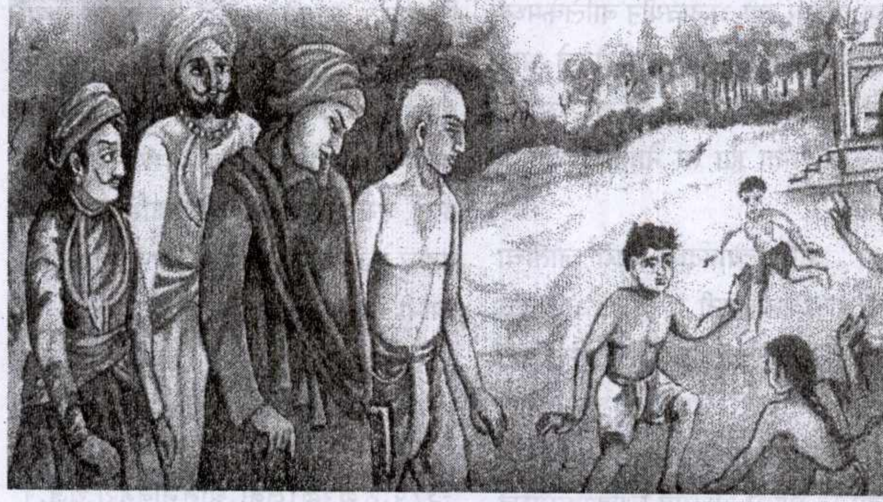

मातृशक्तीचा सम्मान

त्या काळी स्वामी दयानंद हे चित्तौड येथे राहत होते. याच ठिकाणी मेवाडचे राजे महाराणा सज्जनसिंह यांनी येऊन स्वामीजींना राजधानी उदयपुर येथे येण्याचे निमंत्रण दिले. स्वामीजींनी या आमंत्रणाचा स्वीकार केला. एके दिवशी स्वामी दयानंद आपल्या सहकारी पंडितांसमवेत आणि इतर भक्तजनांसोबत भ्रमण करण्यासाठी निघाले. त्याच वेळी एका मंदिराच्या शेजारी काही मुले खेळत असलेली स्वामीजींनी पाहिली. या मुलांमध्ये एक छोटीशी अल्पवयीन मुलगी सुद्धा खेळत होती. तिच्या अंगावर वस्त्रे फार कमी होती. जेंव्हा स्वामीजींची दृष्टी त्या बालिकेवर पडली, तेंव्हा त्यांनी आपली मान खाली झुकविली आणि ते लगेच पुढे वळले. सोबत चालणाऱ्यांनी असा विचार केला की, 'स्वामीजींनी समोरच्या देवळास किंवा त्यात ठेवलेल्या मूर्तीलाच नमस्कार केला आहे.' म्हणून एका पंडिताने लगेच वक्रदृष्टी टाकत स्वामीजींना म्हटले - 'महाराज ! तुम्ही मूर्तीपूजेचे किती जरी खंडण करीत असला, तरी देवतांच्या प्रतिमांमध्ये इतकी मोठी शक्ती असते की, त्या आपल्यापेक्षा मोठमोठ्या विरोधकांच्या माना आपल्यासमोर झुकवून घेतातच. आज देखील हेच घडले आहे. देवाच्या मूर्तीसमोर आपणांस आपले मस्तक झुकवावेच लागले ना ?' स्वामीजींनी त्याचे समाधान करीत लगेच म्हंटले, 'अरे भोळ्या माणसा ! मी

thearyasamaj.org

देवळासमोर किंवा देवाच्या मूर्तीसमोर नमस्कार केला, असे जर तू समजला असशील तर ते पूर्णपणे चुकीचे आहे. कारण, मी तर त्या अल्पवयीन बालिकेमध्ये असलेल्या मातृशक्तीचे दर्शन घेतले आहे आणि तिलाच प्रणाम केला आहे. खरोखरच माता ह्या तर नेहमीच वंदनीय असतात.'

ऋषि दयानंदांनी नारी जातीचा गौरव वाढविण्यासाठी व तिला अधिकार बहाल करुन देण्यासाठी मोठे कार्य केले आहे. त्यांनी स्त्री उद्धाराचे जे कार्य केले आहे, ते भारतदेशाच्या महिला जागृतीच्या इतिहासात सोनेरी अक्षरांत लिहिण्यासारखे आहे. स्वामीजी हे भारतीय स्त्रियांना बौद्धिक, मानसिक शक्ती व शारीरिक बळाने परिपूर्ण करु इच्छित होते. म्हणूनच फ्रान्स देशाचे विचारवंत, तत्ववेत्ते आणि लेखक स्व.रोम्याँ रोलाँ यांनी स्वामीजीविषयी आपले गौरवोद्‌गार प्रगट करीत त्यांना स्त्री जातीचे महान हितकारी समाजसेवक म्हणून संबोधले आहे. तसेच त्यांच्या या ऐतिहासिक कार्याचे महत्व रेखाटतांना इतर सर्वांगिण कार्याचीही त्यांनी प्रशंसा केली आहे.

●●●●●

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५,शंकरकॉलनी,श्रीगंगानगर(राज.)

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभातंर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित

श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय, परली-

प्रवेश सूचना

आप सभीको सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभांतर्गत आर्य समाज परली द्वारा संचालित **'स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल महाविद्यालय'** में दि.१५ जून २०१४ से पांचवी कक्षा में उत्तीर्ण छात्रों को छठी कक्षा में प्रवेश दिये जा रहे हैं। परली शहर के वैद्यनाथ मंदिर से २ कि. मी. दूरी पर सुरम्य पर्वतीय प्रदेश में विद्यमान इस शिक्षास्थली में महर्षि दयानन्द आर्ष विद्यापीठ, झज्जर (रोहतक) से संलग्न आर्ष पाठ्यक्रम चलाया जाता है, जिसमें वेद, व्याकरण, संस्कृत साहित्य के साथ ही अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, गणित, विज्ञान आदि विषयों का तज्ज्ञ अध्यापकों के सान्निध्य में अध्यापन होता है। गरीब, अनाथ व होनहार छात्रों को निःशुल्क प्रवेश दिया जाएगा। **अतः अपने बच्चों को सुसंकारित कराने व वेदानुयायी बनाने हेतु प्रवेश दिलावें।**

सम्पर्क- आचार्य प्रवीण(८८५५०८०६३२),
विज्ञानमुनि(९९७५३७५७११),डॉ.ब्रह्ममुनि (९४२१९५१९०४)

thearyasamaj.org

ज्येष्ठ विचारवंत माजी खा.जे.एम. वाघमारे यांची गुरुकुलास सदिच्छा भेट

श्रद्धानंद गुरुकुल मानवतेच्या विचारांचे व्यासपीठ बनावे.

अध:पतनाच्या दिशेने वाटचाल करणाऱ्या समाजाला आज मोठ्या प्रमाणात मानवी मूल्यांची गरज असून आर्य समाजातर्फे चालविले जाणारे परळी येथील श्रद्धानंद गुरुकुल हे मानवतेच्या विचारांचा प्रसार करणारे व्यासपीठ बनावे, अशी अपेक्षा प्रसिद्ध विचारवंत व माजी खासदार डॉ.जे.एम.वाघमारे यांनी व्यक्त केली.

परळी येथील आर्य समाजातर्फे संचालित नंदागौळ मार्गावरील श्रद्धानंद गुरुकुल आश्रमास डॉ.श्री वाघमारे यांनी नुकतीच (दि.४) सदिच्छा भेट देऊन गुरुकुलातील विविध उपक्रमांचे कौतुक केले. यावेळी त्यांच्या सांसदीय कार्यकाळात खासदार फंडाच्या १५ लाख रु. निधीतून बांधण्यात आलेल्या 'पं.नरेंद्र वैदिक अनुसंधान केंद्र भवना'ची ही त्यांनी पाहणी केली. या प्रसंगी आयोजित एका छोटेखानी कार्यक्रमात डॉ.वाघमारे यांचा मंत्री श्री उग्रसेन राठौर यांच्या हस्ते भावपूर्ण सत्कार करण्यात आला. याप्रसंगी आपल्या मार्गदर्शनपर भाषणात त्यांनी आर्य समाजाच्या क्रांतीकारी कार्यावर प्रकाश टाकला. अध्यक्षस्थानी संस्थेचे आधारस्तंभ व प्रधान श्री रामपाल लोहिया हे होते. तर प्रमुख पाहुणे म्हणून ज्येष्ठ भाषाभ्यासक प्रा.ओमप्रकाश होळीकर हे होते.

यावेळी डॉ.वाघमारे म्हणाले, परिश्रम, दातृत्व आणि समर्पण या त्रिवेणी संगमामुळे वैदिक विचारांचा वारसा जपणारे हे गुरुकुल वैश्विक शांती, मानवतावाद आणि राष्ट्रीय एकात्मभाव वाढीस पूरक ठरणारे आहे. आर्य हुतात्मे स्वामी श्रद्धानंदांच्या नावाने या संस्थेचा लौकिक वाढलेला आहे. पंडित नरेंद्र यांच्यासारख्या हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामातील क्रांतीकारी आर्य नेत्याने समाज जागृतीचे मोठे कार्य केले आहे. त्यांच्या नावे गुरुकुलात वैदिक अनुसंधान कार्य मोठ्या प्रमाणात होवो आणि त्यामुळे समाजाला नवी दिशा मिळो, अशी अपेक्षा

thearyasamaj.org

त्यांनी व्यक्त केली. याप्रसंगी प्रा.होळीकर यांनी श्री वाघमारे यांच्या जीवन व कार्याचा परिचय करुन दिला. संस्थेचे मार्गदर्शक डॉ.ब्रह्ममुनिजी यांनी गुरुकुल संस्थेत चाललेल्या उपक्रमांचा आढावा घेतला. कार्यक्रमास आर्य समाजाचे मंत्री श्री उग्रसेन राठौर, उपप्रधान श्री गिरधारीलाल गट्टाणी, उपमंत्री जयपाल लाहोटी, कोषाध्यक्ष- प्रभुलाल गोहिल, लक्ष्मणराव आर्य, रंगनाथराव तिवार, प्रा.अखिलेश शर्मा, प्रा.नरेश शास्त्री, प्रा.उल्हास तिवार, उमेश तिवार, अमृतमुनी, विवेकमुनी, ब्रह्मनादमुनी आदींसह आर्य समाजाचे कार्यकर्ते, वानप्रस्थी, अध्यापक आदी उपस्थित होते. कार्यक्रमाचे संचलन प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य यांनी केले तर आभार श्री उग्रसेन राठौर यांनी मानले.

शोक वार्ता

नारायणराव खाडे यांचे निधन

किल्ले धारुर येथील आर्य समाजाचे कार्यकर्ते व सेवक श्री उद्धवराव खाडे यांचे शतायुष्यप्राप्त वडील श्री नारायणराव खाडे यांचे दि. २७ एप्रिल २०१४ रोजी मध्यरात्री वृद्धापकाळाने निधन झाले. ते १०२ वर्षाचे होते.

त्यांच्या मागे श्री उद्धव यांच्यासह चार मुले, सुना, नातवंडे असा भरगच्च परिवार आहे. मूळचे आडस येथील रहिवाशी श्री खाडे हे एक कष्टाळू, प्रामाणिक व सहिष्णुवृत्तीचे शेतकरी होते. जीवनभर मेहनत करुन त्यांनी शेती व्यवसाय करीत त्यांनी आपल्या कुटुंबीयांना सुसंस्काराने वाढविले. दिवंगत खाडे यांच्या पार्थिवावर सर्वश्री पं.भारत कापसे व काशीनाथराव चिंचाळकर यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

स्वा.सै.सिद्रामप्पा ठेसे यांचे निधन

हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामात भाग घेतलेले स्वा.सै.श्री सिद्रामप्पा मडोळप्पा ठेसे यांचे दि. २८मार्च रोजी सकाळी औसा येथे हृदयविकाराने निधन झाले. ते ८५ वर्षे वयाचे होते. त्यांच्या मागे पत्नी, तीन मुले, सुना, मुली, जावई असा परिवार आहे.तत्कालीन निजाम राजवटीला विरोध केल्याबद्दल श्री ठेसे यांना दोन वेळा गुलबर्गा येथे कारावास भोगावा लागला होता. त्यांच्या कार्याची दखल घेऊन शासनाने ताम्रपट देऊन त्यांचा गौरव केला होता.

वरील दोन्हीं दिवंगत आत्म्यांना महाराष्ट्र आर्य प्र.सभेची भावपूर्ण श्रद्धांजली !

thearyasamaj.org

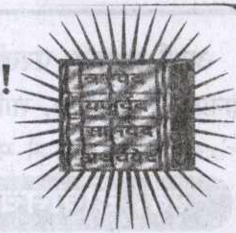

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय
जीवन मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु
कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. 333/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

- मानवकल्याणकारी उपक्रम -

- 'वैदिक गर्जना' मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव- 'मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर'
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

आर्य समाज, परली-वै. द्वारा संचालित स्वामी श्रद्ध्दानन्द गुरूकुलाश्रम में दानप्रदात्री माता स्व. शान्तिदेवी मायर(लन्दन) द्वारा प्राप्त १५ लाख रूपयों के पावन दान से रूग्णों की सेवा में मराठवाडा (महाराष्ट्र) की पावन सन्तभूमि में सर्वप्रथम उद्घटित

स्व. दीवानचन्द मायर स्मृति 'संजीवनी आरोग्य मंदिर'

शरीर शुद्धि से स्वास्थ्यलाभ, रोगनिवारण व सुंदरता प्राप्त करो।

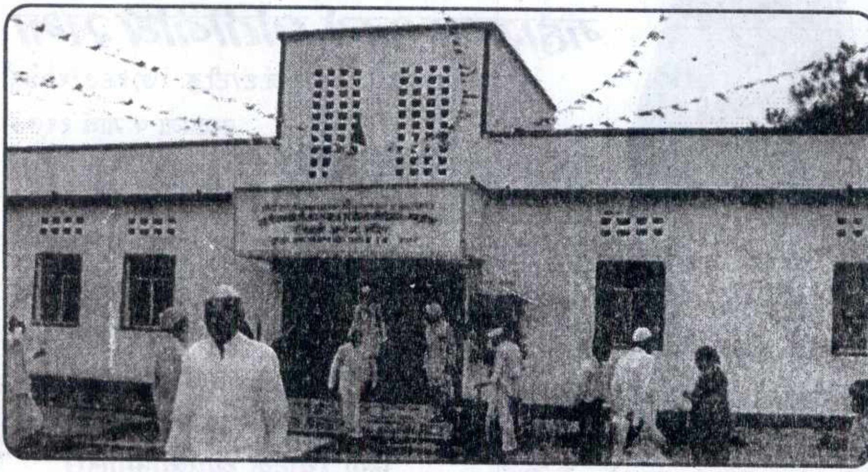

औषधिविना विविध प्रकार के जीर्ण रोग, मधुमेह, रक्तचाप, हृदयविकार, कर्करोग, वातरोग, आमवात, कुष्ठरोग, मोटापा, चेहरों व आखों का कालापन, मुखमण्डल विद्रुप होना, वांग आदि के साथ मानसिक तान तनाव, निराशा, उद्विग्नता, पागलपन, आदि रोगों का शरीर शुद्धि के माध्यम से सम्पूर्ण इलाज। इसके लिए योग, प्राकृतिक व आयुर्वेद चिकित्सा के द्वारा स्वास्थ्य लाभ का सुनहरा अवसर इस आरोग्य मन्दिर में!

आरोग्य मन्दिर की विशेषताएं

* तज्ज्ञ एवं अनुभवी वैद्यों द्वारा इलाज।
* महिला व पुरूष रूग्णों के लिए स्वतंत्र चिकित्सा कक्ष।
* महिला रूग्णों के लिए अलग से महिला परिचारिका।
* रूग्णों की भोजन व निवास की अल्पशुल्क में व्यवस्था।
* शुद्ध हवा-पानी व निसर्ग का सान्निध्य।
* आध्यात्मिक जीवनयापन के लिए प्रयत्न।

चिकित्सा समय
प्रातः ६ से ९/सायं. ४ से ६

रूग्ण जांच व पंजीकरण
प्रातः १० से १२ बजे तक

पंजीकरण शुल्क रू. ५० (प्रति रूग्ण)

चिकित्सक

वैद्य विज्ञानमुनि (मोबा.९९७५३७५७११) डॉ. ब्रह्ममुनि (मोबा.९४२१९५१९०४)

thearyasamaj.org

।। प्रान्तीय सभाद्वारा 'आर्य पुरोहित सम्मान समारोह' ।।

प्रसिद्ध विद्वान पुरोहित स्व.पं. विश्वमित्रजी शास्त्री का सम्मान स्वीकारते हुए विज्ञानमुनिजी, पं. सुधाकर शास्त्री, राहुल तोळमारे।

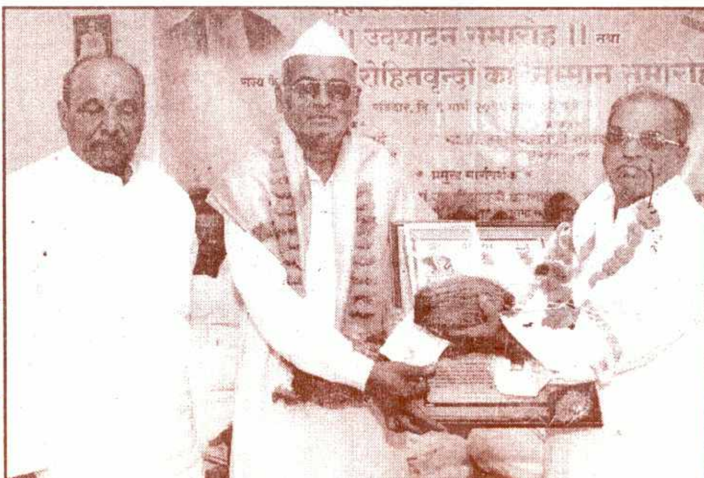

विद्वान पुरोहित पं. दिनकररावजी देशपांडे का सम्मान पं. सुरेन्द्रपालजी द्वारा स्वीकारते हुए श्री म्हाळप्पा दुधभाते एवं श्री विजय बेळमकर।

हैदराबाद के पुरोहित पं. प्रियदत्तजी शास्त्री का सम्मान डॉ.धर्मेन्द्रजी शास्त्र द्वारा स्वीकारते हुए श्री उत्तम उबाळे। साथ में हैं प्रा.नरेश शास्त्री।

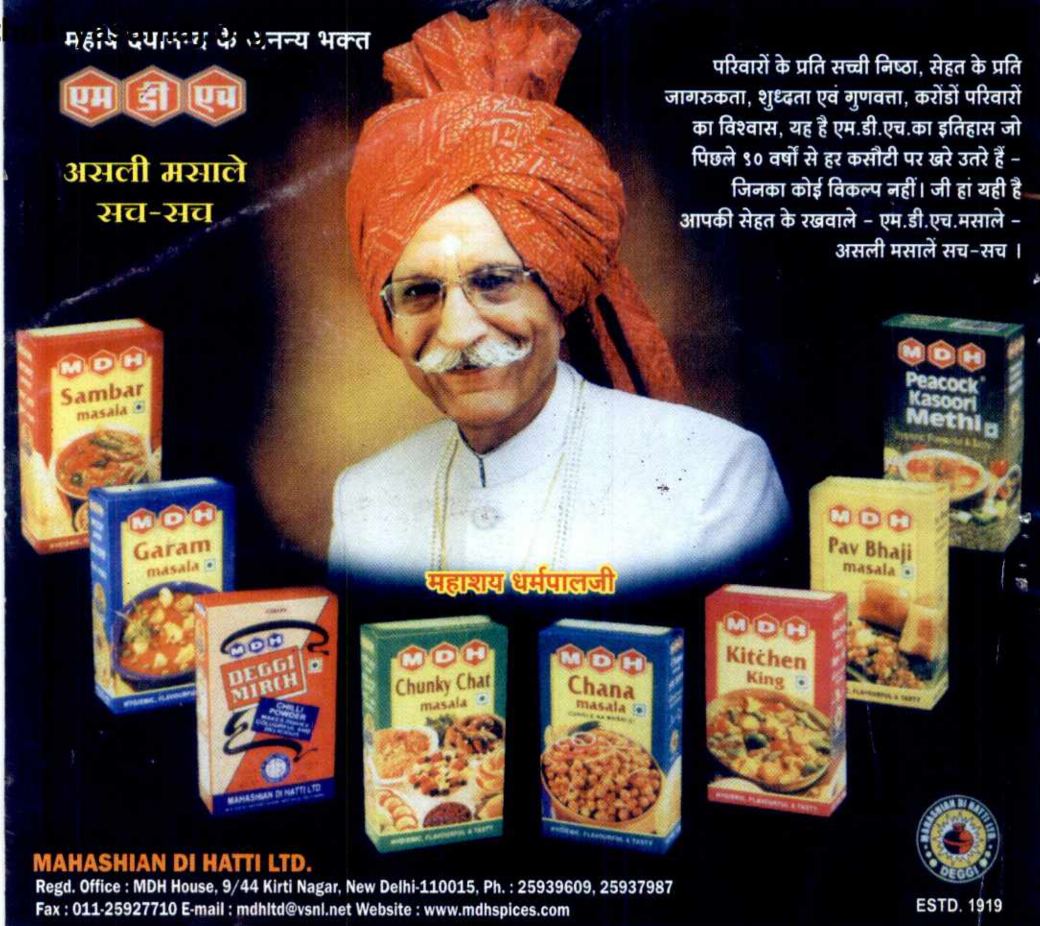

L-2/18/RNP /16/Beed/2012-14

Reg. No. RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,
श्री

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के भूमिगत सेनानी, आर्य समाज, संभाजीनगर (औरंगाबाद) के पूर्व प्रधान

स्व.श्री नरेन्द्रसिंहजी संग्रामसिंहजी चौहान की

जन्म ३१ मार्च १९२८ — पावन स्मृति में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेट — निधन १७ मार्च २०००

सौजन्य

जुगलकिशोर चुन्नीलाल दायमा	दयाराम राजाराम बसैये	ॲड.जोगेंद्रसिंह नरेंद्रसिंह चौहान
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज, महर्षि दयानंद भवन, सरस्वती कालोनी, संभाजीनगर (औरंगाबाद)